

प्रधानमंत्री कार्यालय

# शेर-ए-कश्मीर कृषि विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह के अवसर पर 19 मई, 2018 को प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 19 MAY 2018 10:10PM by PIB Delhi

यहां उपस्थित सभी महानुभाव और मेरे नौजवान साथियो।

साथियो आज सुबह जम्मू-कश्मीर के अलग-अलग हिस्सों में जाने का मुझे अवसर मिला। मुझे यहां आने में देर हुई, हम लोग करीब एक घंटा देर से पहुंचे, और सबसे पहले तो मैं आप सबसे क्षमा चाहूंगा हमें आने में विलंब हो गया। लेह से लेकर श्रीनगर तक विकास के कई projects का आज लोकार्पण हुआ है। कुछ नए कार्यों की शुरुआत हुई है। जम्मू के खेत-खलिहान से लेकर कश्मीर के बागान और लेह-लद्दाख की प्राकृतिक और आध्यात्मिक ताकत का हमेशा मैंने अनुभव किया है। मैं जब भी यहां आता हूं मेरा ये विश्वास और मजबूत हो जाता है कि देश का एक क्षेत्र विकास के पथ पर बहुत आगे निकलने का सामर्थ्य रखता है। यहां के करतूतवान, श्रमशील लोग आप जैसे प्रतिभाशाली युवाओं के सार्थक प्रयासों से हम सही दिशा में आगे बढ़ रहे हैं और सफलता अर्जित कर रहे हैं।

साथियो इस यूनिवर्सिटी के लगभग 20 साल हो गए हैं और तब से लेकर अब तक अनेक छात्र-छात्राएं यहां से पढ़कर निकल चुके हैं। और वे सामाजिक जीवन में कहीं न कहीं अपना योगदान दे रहे हैं।

आज यूनिवर्सिटी का छठा Convocation समारोह है। इस मौके पर मुझे आप सभी के बीच आने का अवसर मिला। आमंत्रण के लिए यूनिवर्सिटी प्रशासन का मैं बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं। मुझे खुशी है कि आज यहां पर जम्मू के स्कूलों से भी कुछ बच्चे, कुछ विद्यार्थी उपस्थित हैं। आज यहां 400 से अधिक छात्र-छात्राओं को डिग्री, मैडल और सर्टिफिकेट दिए गए। ये आपके उस श्रम का परिणाम है जो देश के इस प्रतिष्ठित संस्थान का हिस्सा रहते हुए आपने सार्थक किया है। आप सभी को बहुत-बहुत बधाई देता हूं, शुभकामनाएं देता हूं, और विशेषकर बेटियों को क्योंकि आज मैदान उन्होंने मारा है।

आज देश में ऐसे खेलकूद देखिए, एजुकेशन देखिए; सब जगह पर बेटियां कमाल कर रही हैं। मैं मेरे सामने देख रहा हूं कि आपकी आंखों में एक चमक दिखाई दे रही है, आत्मविश्वास नजर आ रहा है। ये चमक भविष्य के सपनों को भी और चुनौतियों को, दोनों को समझने का जज्बा ले करके बैठी हैं।

साथियो, आपके हाथ ये सिर्फ डिग्री या सर्टिफिकेट नहीं हैं, लेकिन ये देश के किसानों का उम्मीद पत्र है। आपके हाथ में जो सर्टिफिकेट है उसमें देश के किसानों की आशा-आकांक्षाएं भरी हुई हैं। ये उन करोड़ों उम्मीदों का दस्तावेज है जो देश का अन्नदाता, देश का किसान आप जैसे मेधावी लोगों से बड़ी आस लगाए बैठा हुआ है।

समय के साथ टेक्नोलॉजी तेजी से बदल रही है और बदलती हुई टेक्नोलॉजी तमाम व्यवस्थाओं को आमूल-चूल परिवर्तित कर रही है। इस रफ्तार के साथ अगर सबसे तेज चल सकता है तो वो हमारा देश का नौजवान है, हमारा देश का युवा है। और इसलिए भी मैं आपके बीच, आज जब आपसे बात करने का मुझे अवसर मिला है, मैं इसे बहुत महत्वपूर्ण मानता हूं।

नौजवान साथियो टेक्नोलॉजी जैसे nature of job बदल रही है, रोजगार के नए-नए तरीके विकसित हो रहे हैं, वैसे ही आवश्यकता agriculture sector में भी नया culture विकसित करने की जरूरत है। अपने परम्परागत तरीकों को जितना ज्यादा हम technique पर केन्द्रित करेंगे उतना ही किसान को अधिक लाभ होगा। और इसी vision पर चलते हुए केंद्र सरकार देश में खेती से जुड़े आधुनिक तौर-तरीकों को बढ़ावा दे रही है।

देश में अब तक 12 करोड़ से ज्यादा soil health card बांटे जा चुके हैं। इसमें जम्मू-कश्मीर में भी 11 लाख किसानों को ये कार्ड मिल चुके हैं। इन कार्ड की मदद से किसानों को ये पता चल रहा है कि उनके खेत को किस तरह की खाद की जरूरत है, क्या आवश्यकता है।

यूरिया की शत-प्रतिशत नीम कोटिंग का लाभ भी किसानों को हुआ है। इससे उपज तो बढ़ी ही है, प्रति हेक्टेयर यूरिया की खपत भी कम हुई है।

सिंचाई की आधुनिक तकनीक और पानी की प्रत्येक बूंद का इस्तेमाल करने की सोच के साथ micro और sprinkler irrigation को प्रोत्साहित किया जा रहा है। Per drop more crop ये हमारा मिशन होना चाहिए।

पिछले चार साल में 24 लाख हेक्टेयर से ज्यादा जमीन को micro और sprinkler irrigation के दायरे में लाया गया है। अभी दो दिन पूर्व ही कैबिनेट ने micro irrigation के लिए पांच हजार करोड़ रुपये के फंड का ऐलान किया है उसको स्वीकृति दे दी है। ये सारी नीतियां, ये सारे निर्णय किसान की आय दोगुनी करने के हमारे लक्ष्य को और मजबूत करते हैं। ऐसे अनेक प्रयासों से बन रही व्यवस्था का एक अहम हिस्सा आप सभी लोग हैं।

यहां से पढ़कर जाने के बाद से scientific approach, technological innovation और research and development के माध्यम से कृषि को लाभकारी व्यवसाय बनाने में आप सक्रिय भूमिका निभाएंगे, ये देश की आपसे अपेक्षाएं हैं। खेती से लेकर पशुपालन और इससे जुड़े दूसरे व्यवसायों को नई तकनीकों से बेहतर बनाने की जिम्मेदारी हमारी युवा पीढ़ी के कंधों पर है।

यहां आने से पहले आपके प्रयासों के बारे में सुन करके मेरी आशा और जरा बढ़ गई है। आपसे अपेक्षाएं भी मेरी जरा ज्यादा बढ़ गई हैं। किसानों की आय बढ़ाने के लिए आपने और आपकी इस यूनिवर्सिटी ने अपने क्षेत्र के लिए जो मॉडल विकसित किया है, उसके बारे में भी मुझे बताया गया। आपने इसको integrated farming system model यानी IFS Model का नाम दिया है। इस Model में अनाज भी है, फल-सब्जी और फूल भी हैं, पशुधन भी है, मछली और मुरगीपालन भी है, कम्पोस्ट भी है, मशरूम, बायोगैस और मेढ़ पर पेड़ का concept भी है। इससे हर महीने आय तो सुनिश्चित होगी बल्कि ये एक वर्ष में लगभग दो गुना रोजगार उपलब्ध कराएगा।

पूरे साल भर किसान की आय सुनिश्चित करने वाला ये Model अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है। साफ-सुथरा ईंधन भी मिला, कृषि के कचरे से भी मुक्ति मिली, गांव भी स्वच्छ हुआ, पारम्परिक खेती से जो आय किसानों को प्राप्त होती है, उससे ज्यादा आय आपका ये मॉडल सुनिश्चित करता है। यहां के climate conditions को ध्यान में रखते हुए आपने जो ये मॉडल विकसित किया है, मैं उसकी विशेष प्रशंसा करना चाहता हूं। मैं चाहूंगा इस मॉडल को जम्मू और आसपास के इलाकों में ज्यादा से ज्यादा प्रचारित-प्रसारित किया जाए।

साथियों, सरकार किसान को सिर्फ एक फसल पर निर्भर नहीं रखना चाहती बल्कि अतिरिक्त कमाई के जितने भी साधन हैं, उनको बढ़ावा देने का कार्य और उस काम पर हम बल दे रहे हैं। Agriculture में भविष्य के नए sectors की उन्नति किसानों की उन्नति में एक अनिवार्य हिस्सा बनने वाली है, सहायक होने वाली है।

Green और White revolution के साथ ही जितना ज्यादा हम organic revolution, water revolution, blue revolution, sweet revolution, उस पर बल देंगे, उतना ही किसानों की आय बढ़ेगी। इस बार जो बजट हमने पेश किया उसमें भी सरकार की यही सोच रही है। डेयरी को बढ़ावा देने के लिए पहले एक अलग फंड की व्यवस्था की थी लेकिन इस बार मछली पालन और पशुपालन के लिए दस हजार करोड़ के दो नए फंड बनाए गए हैं। यानी कृषि और पशुपालन के लिए किसानों को अब आर्थिक मदद आसानी से मिल पाएगी। इसके अतिरिक्त किसान क्रेडिट कार्ड की जो सुविधा पहले सिर्फ खेती तक सीमित थी अब मछली और पशुपालन के लिए भी ये सुविधा किसान को उपलब्ध होगी।

कृषि क्षेत्र में सुधार के लिए हाल ही में एक बड़ी योजना का भी ऐलान किया गया है। कृषि से जुड़ी 11 योजनाओं को हरित क्रांति कृषि उन्नति योजना में शामिल किया गया है। इसके लिए 33,000 करोड़ से अधिक का प्रावधान किया गया है। और तैतीस हजार करोड़ रुपया अमाउंट कम नहीं है।

साथियों waste से wealth create करने की तरफ भी सरकार का बड़ा फोकस है। देश के अलग-अलग हिस्सों में अब इस तरह की मुहिम जोर पकड़ रही है कि जो agriculture waste से wealth के लिए काम कर रही है।

इस साल बजट में सरकार ने गोबर धन योजना का ऐलान भी किया है। ये योजना ग्रामीण स्वच्छता बढ़ाने के साथ ही गांव में निकलने वाले bio wastage से किसानों एवं पशुपालकों की आमदनी बढ़ाने में मदद करेगी। ऐसा भी नहीं है कि सिर्फ by product से ही wealth बन सकती है। जो मुख्य फसल है main product है, कई बार उसका भी अलग इस्तेमाल किसानों की आमदनी बढ़ा सकता है। Coir waste हो, coconut सेल्स हों, bamboo waste हो, फसल कटने के बाद खेत में जो residue रहते हैं, इन सभी से आमदनी बढ़ सकती है।

इसके अलावा बांस से जुड़े, bamboo के संबंध में जो पुराना कानून था उसमें भी हमने संशोधन कर अब बांस की खेती की राह भी आसान कर दी है। आप हैरान हो जाएंगे करीब 15 हजार करोड़ रुपये का bamboo को हमारा देश import करता है। कोई logic नहीं है।

साथियों, मुझे भी ये भी जानकारी दी गई कि यहां पर आप लोगों ने 12 फसलों की वेरायटी विकसित की है। रणबीर बासमती, ये तो देशभर में शायद बहुत मशहूर है। आपका ये प्रयास प्रशंसनीय है। लेकिन आज जो खेती के सामने चुनौतियां हैं वो बीज की गुणवत्ता से भी कहीं आगे हैं। ये चुनौती जुड़ी है मौसम में जो बदलाव हो रहा है, उसके साथ भी। हमारे किसान, कृषि वैज्ञानिक की मेहनत और सरकार की नीतियों का ये असर है कि पिछले वर्ष हमारे देश में

किसानों ने रिकॉर्ड उत्पादन किया है। गेहूं हो, चावल हो या फिर दाल; पुराने रिकॉर्ड सारे टूट गए हैं। तिलहन और कपास में भी भारी वृद्धि दर्ज की गई है। लेकिन अगर आप बीते कुछ वर्षों का डेटा देखेंगे तो पाएंगे कि उत्पादन में एक अनिश्चितता की स्थिति बनी हुई है और इसका सबसे बड़ा कारण है हमारी खेती की बारिश पर निर्भरता।

क्लाइमेट चेंज के प्रभाव की वजह से जहां एक तरफ, जहां तापमान में बढ़ोतरी देखी जा रही है वहीं कुछ क्षेत्रों में बारिश भी कम होती जा रही है। जम्मू-कश्मीर में भी इसका प्रभाव देखा जा रहा है। धान की खेती हो, बागवानी हो या फिर टूरिज्म; पर्याप्त मात्रा में पानी इन सबके लिए बेहद आवश्यक है। जम्मू-कश्मीर की पानी की जरूरत ग्लेशियर पूरा करते हैं। लेकिन जिस प्रकार तापमान बढ़ रहा है उससे ग्लेशियर तेजी से पिघल रहे हैं। इसका परिणाम कुछ हिस्सों में कम पानी और कुछ क्षेत्रों में बाढ़ के रूप में भी सामने आ रहा है।

साथियों, यहां आने से पहले जब मैं आपकी यूनिवर्सिटी के बारे में पढ़ रहा था तो मुझे आपका FASAL फसल, प्रोजेक्ट के बारे में भी पता चला। इसके माध्यम से आप खेती के सीजन से पहले ही फसल की आउटपुट और सालभर कितनी नमी रहने वाली है, इसका अनुमान लगाते हैं। लेकिन अब इससे भी आगे जाने की आवश्यकता है। नई परिस्थितियों से निपटने के लिए नई रणनीति की जरूरत है। ये रणनीति फसलों के स्तर पर भी चाहिए और टेक्नोलॉजी के स्तर पर भी चाहिए। मैं ऐसी फसलों की वेरायटी पर ध्यान देना होगा जो कम पानी लेती हों। इसके अलावा agriculture products का किस तरह value addition किया जा सकता है, ये भी निरंतर आपके thought process में होना चाहिए।

जैसे मैं आपको sea buckthorn का उदाहरण देता हूं। आप सभी sea buckthorn के बारे में जानते होंगे। लद्दाख क्षेत्र में पाया जाने वाला ये प्लांट माइनस 40 से +40 डिग्री सेंटीग्रेड में कठोरतम तापमान को सहन करने की ताकत रखता है। चाहे जितना सूखा हो, ये अपने-आप फलता-फूलता है। इसके औषधीय गुणों का जिक्र 8वीं सदी में लिखे गए तिब्बती साहित्य में भी मिलता है। देश और विदेश के कई आधुनिक रिसर्च संस्थानों ने इस sea buckthorn को बहुत ही मूल्यवान माना गया है। ब्लड प्रेशर की समस्या हो, बुखार हो, ट्यूमर हो, स्टोन हो, अल्सर हो, या फिर सर्दी-खांसी हो; sea buckthorn से बनी अनेक तरह की दवाइयां इनमें लाभ देती हैं।

एक स्टडी के मुताबिक दुनिया में उपलब्ध sea buckthorn में पूरी मानव जाति की विटामिन सी की जरूरत अकेले ही पूरी करने की क्षमता है। इस एग्रीकल्चर प्रोडक्ट के value addition ने तस्वीर बदल दी है। sea buckthorn का इस्तेमाल अब हर्बल टी में, जैम, protective oil, protective cream और health drink में भी बहुत बड़ी मात्रा में हो रहा है। बहुत ऊंचे पहाड़ों पर तैनात सुरक्षाबल के जवानों के लिए ये बहुत उपयोगी हो रहा है। sea buckthorn से कई तरह के antioxidant product बनाए जा रहे हैं।

आज इस मंच पर मैं उदाहरण इसलिए दे रहा हूं, ये बात इसलिए भी कह रहा हूं क्योंकि भविष्य में देश के जिस भी हिस्से को आप अपना कार्यक्षेत्र बनाएंगे वहां ऐसे आपको अनेक product मिलेंगे। वहां अपने प्रसायों से आप एक मॉडल विकसित कर सकते हैं। कृषि छात्र से कृषि वैज्ञानिक बनते हुए, value addition करते हुए आप अपने सिर पर कृषि क्रांति का नेतृत्व कर सकते हैं।

जैसे एक महत्वपूर्ण विषय है एग्रीकल्चर में artificial intelligence. ये आने वाले समय में खेती में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने वाला है। देश के कुछ हिस्सों में सीमित स्तर पर किसान इसका इस्तेमाल कर भी रहे हैं जैसे दवाई और पेस्ट कंट्रोल के लिए drone जैसी तकनीक का इस्तेमाल आज, अब धीरे-धीरे शुरू हो रहा है।

इसके अलावा soil mapping और community pricing में भी टेक्नोलॉजी काम कर रही है। इसके अलावा आने वाले दिनों में block chain technology का भी बड़ा अहम रोल रहेगा। इस तकनीक से supply chain की real time monitoring हो पाएगी, इससे खेती में होने वाले लेनदेन में पारदर्शिता आएगी। सबसे बड़ी बात, बिचौलियों की बदमाशी पर भी लगाम लगेगी और उपज की बर्बादी पर भी लगाम लगेगी।

साथियों, ये भी हम सभी को भलीभांति पता है कि किसान की लागत बढ़ने की एक वजह खराब क्वालिटी के बीज, फर्टिलाइजर और दवाइयां भी होती हैं। Block chain technology से इस समस्या पर नियंत्रण पाया जा सकता है। इस तकनीक के माध्यम से प्रॉडक्शन की प्रक्रिया से लेकर किसानों तक पहुंचने तक, किसी भी चरण पर प्रॉडक्ट की जांच आसानी से की जा सकती है।

एक पूरा नेटवर्क होगा जिसमें किसान processing units, वितरक, regulatory authorities, और उपभोक्ता की एक chain होगी। इन सभी के बीच नियम और शर्तों के आधार पर बनाए गए smart contract पर ये तकनीक विकसित की जा सकती है। इस पूरी chain से जुड़ा व्यक्ति क्योंकि इस पर नजर रख सकता है, लिहाजा इसमें भ्रष्टाचार की गुंजाइश भी कम रहेगी।

इसके अतिरिक्त, परिस्थितियों के हिसाब से फसल की बदलती कीमतों की वजह से किसानों को होने वाले नुकसान से भी ये तकनीक निजात दिला सकती है। इस chain से जुड़ा हर व्यक्ति एक-दूसरे के द्वारा real time में जानकारीयां साझा कर सकता है और आपसी शर्तों के आधार पर, प्रत्येक स्तर पर कीमतें तय की जा सकती हैं।

साथियो, सरकार पहले ही e-NAM जैसी योजना के जरिए देशभर की मंडियों को जोड़ रही है। इसके अतिरिक्त 22 thousand ग्राम मंडियों को थोक मंडियों और वैश्विक बाजारों से जोड़ने का प्रयास किया जा रहा है। सरकार famer producer organization FPO को भी बल दे रही है, बढ़ावा दे रही है। किसान अपने क्षेत्र में, अपने स्तर पर छोटे-छोटे संगठन बनाकर भी ग्रामीण हॉट और बड़ी मंडियों से बड़ी आसानी से जुड़ सकते हैं।

अब Block chain जैसी तकनीक हमारे इन प्रयासों को और भी अधिक लाभप्रद बनाएगी। साथियो आप लोगों को ऐसे मॉडल विकसित करने के बारे में भी सोचना होगा जो स्थानीय जरूरतों के साथ-साथ futuristic technology friendly भी हो।

Agriculture sector में नए startup कैसे आएँ, नए innovation कैसे आएँ, इस पर हमारा ध्यान केन्द्रित होना चाहिए। स्थानीय किसानों को भी तकनीक से जोड़ने के लिए आपके प्रयास निरंतर होते रहने चाहिए। और मुझे बताया गया है कि आप सभी ने पढ़ाई के दौरान गांव के स्तर पर लोगों को organic खेती से जोड़ने के लिए काफी काम किया है। Organic खेती के अनुकूल फसलों की बेरायती को लेकर भी आपके द्वारा रिसर्च की जा रही है। हर स्तर पर इस तरह के अलग-अलग प्रयास भी किसानों के जीवन को खुशहाल बनाने का काम करेंगे।

साथियो, जम्मू-कश्मीर के किसानों और बागवानों के लिए बीते चार वर्षों में केंद्र सरकार ने भी कई योजनाएं स्वीकृत की हैं। बागवानी और कृषि से जुड़ी अन्य योजनाओं के लिए 500 करोड़ रुपये स्वीकृत किए गए हैं जिसमें से 150 करोड़ रुपये रिलीज भी किए जा चुके हैं। लेह और करगिल में कोल्ड स्टोरेज बनाने के लिए भी काम हो रहा है। इसके अतिरिक्त solar dryer setup करने वालों के लिए 20 करोड़ रुपये की सब्सिडी का भी प्रावधान किया गया है।

मुझे उम्मीद है कि बीज से लेकर बाजार तक किए जा रहे सरकार के ये प्रयास यहां के किसानों को और अधिक सशक्त करेंगे।

साथियो, साल 2022, देश अपनी स्वतंत्रता के 75 वर्ष का पर्व मनाने जा रहा है। मेरा विश्वास है कि तब तक आप में से अनेक छात्र खुद को एक बेहतरीन वैज्ञानिक के तौर पर स्थापित कर चुके होंगे। मेरा आग्रह है कि साल 2022 को ध्यान में रखते हुए आपकी यूनिवर्सिटी और यहां के छात्र अपने लिए कोई न कोई लक्ष्य अवश्य निर्धारित करेंगे। जैसे यूनिवर्सिटी के स्तर पर ये सोचा जा सकता है कि कैसे इसे देश ही नहीं बल्कि दुनिया की top 200 universities की लिस्ट में हम हमारी यूनिवर्सिटी को शामिल करा जाए।

इसी तरह यहां के छात्र प्रति हेक्टेयर कृषि उत्पादन बढ़ाने, ज्यादा से ज्यादा किसानों तक आधुनिक तकनीक को ले जाने संबंधी कोई न कोई संकल्प ले सकते हैं। साथियो जब हम खेती को technology lead और entrepreneurship driven बनाने की बात करते हैं तब quality human resources तैयार करना अपने-आप में एक बहुत बड़ी चुनौती होती है।

आपकी यूनिवर्सिटी समेत देश के जितने भी ऐसे संस्थान हैं उनकी जिम्मेदारी और बढ़ जाती है। और ऐसे में five T पांच टी- training, talent, technology, timely action और trouble free approach का महत्व मेरी दृष्टि से बहुत बढ़ता जाता है। ये पांच टी देश की कृषि व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन लाने के लिए बहुत आवश्यक हैं। मुझे उम्मीद है कि अपने संकल्प तय करते समय इनका भी ध्यान रखा जाएगा।

साथियो, आज आप यहां एक close classroom environment से बाहर निकल रहे हैं, मेरी आपको शुभकामनाएं हैं। लेकिन ये दीवारों वाला क्लासरूम अब छूट रहा है एक बहुत बड़ा ओपन क्लासरूम बाहर आपका इंतेजार कर रहा है। यहां आपकी सीखने की प्रक्रिया का सिर्फ एक पड़ाव खत्म हुआ है, असल जीवन की गंभीर शिक्षा अब शुरू हो रही है। इसलिए अपने स्टूडेंट वाले mind set को हमेशा जीवित रखना होगा। भीतर के विद्यार्थी को कभी मरने मत दीजिए। तभी आप innovative ideas से देश के किसानों के लिए बेहतर मॉडल विकसित कर पाएंगे।

आप संकल्प लें अपने सपनों को, अपने माता-पिता के सपनों को पूरा करें। राष्ट्र निर्माण में आपका भी सक्रिय योगदान दें। इसी कामना के साथ मैं मेरी बात को समाप्त करता हूं और सभी यशस्वी साथियों को बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं, बहुत-बहुत बधाई देता हूं। उनके परिवारजनों को भी हृदयपूर्वक बहुत शुभकामनाएं, बधाई।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

\*\*\*\*\*

**अतुल तिवारी/हिमांशु सिंह/बाल्मीकि महतो/निर्मल शर्मा**

(रिलीज़ आईडी: 1533841) आगंतुक पटल : 55

प्रधानमंत्री कार्यालय

# विश्व भारती विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह पर प्रधानमंत्री के संबोधन का मोल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 25 MAY 2018 5:20PM by PIB Delhi

मंच पर विराजमान बंगलादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना जी, पश्चिम बंगाल के राज्यपाल श्रीमान केसरी नाथ जी त्रिपाठी, पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री सुश्री ममता बनर्जी जी, विश्व भारती के उपाचार्य प्रोफेसर सबूज कोली सेन जी और रामकृष्ण मिशन विवेकानंद इंस्टीट्यूट के उपाचार्य पूज्य स्वामी आत्मप्रियानंद जी और यहां मौजूद विश्व भारती के अध्यापकगण और मेरे प्यारे युवा साथियों।

मैं सबसे पहले विश्व भारती के चांसलर के नाते आप सबकी क्षमा मांगता हूं। क्योंकि जब मैं रास्ते में आ रहा था। तो कुछ बच्चे इशारे से मुझे समझा रहे थे कि पीने का पानी भी नहीं है। आप सबको जो भी असुविधा हुई है। चांसलर के नाते ये मेरा दायित्व बनता है और इसलिए मैं सबसे पहले आप सबसे क्षमा मांगता हूं।

प्रधानमंत्री होने के नाते मुझे देश के कई विश्वविद्यालयों के convocation में हिस्सा लेने का अवसर मिला है। वहां मेरी सहभागिता अतिथि के रूप में होती है लेकिन यहां मैं एक अतिथि नहीं बल्कि आचार्य यानि चांसलर के नाते आपके बीच में आया हूं। यहां जो मेरी भूमिका है वो इस महान लोकतंत्र के कारण है। प्रधानमंत्री पद की वजह से है। वैसे ये लोकतंत्र भी अपने आप में एक आचार्य तो है जो सवा सौ करोड़ से अधिक हमारे देशवासियों को अलग-अलग माध्यमों से प्रेरित कर रहा है। लोकतांत्रिक मूल्यों के आलोक में जो भी पोषित और शिक्षित होता है वो श्रेष्ठ भारत और श्रेष्ठ भविष्य के निर्माण में सहायक होता है।

हमारे यहां कहा गया है। कि **आचार्यत विद्याविहिता साधिष्ठतम प्राप्नुति इति** यानि आचार्य के पास जाएं उसके बगैर विद्या, श्रेष्ठता और सफलता नहीं मिलती। ये मेरा सौभाग्य है कि गुरुदेव रविन्द्र नाथ ठाकुर की इस पवित्र भूमि पर इतने आचार्यों के बीच मुझे आज कुछ समय बिताने का सौभाग्य मिला है।

जैसे किसी मंदिर के प्रांगण में आपको मंत्रोच्चार की ऊर्जा महसूस होती है। वैसी ही ऊर्जा मैं विश्व भारती, विश्वविद्यालय के प्रांगण में अनुभव कर रहा हूं। मैं जब अभी कार से उतरकर मंच की तरफ आ रहा था तो हर कदम, मैं सोच रहा था कि कभी इसी भूमि पर यहां के कण-कण पर गुरुदेव के कदम पड़े होंगे। यहां कहीं आस-पास बैठकर उन्होंने शब्दों को कागज पर उतारा होगा। कभी कोई धुन, कोई संगीत गुनगुनाया होगा। कभी महात्मा गांधी से लंबी चर्चा की होगी। कभी किसी छात्र को जीवन का, भारत का, राष्ट्र के स्वाभिमान का मतलब समझाया होगा।

साथियों, आज इस प्रांगण में हम परंपरा को निभाने के लिए एकत्र हुए हैं। यह अमरकुंज लगभग एक सदी से ऐसे कई अवसरों का साक्षी रहा है। बीते कई वर्षों से जा आपने यहां सीखा उसका एक पड़ाव आज पूरा हो रहा है। आपमें से जिन लोगों को आज डिग्री मिली है उनको मैं हृदयपूर्वक बहुत-बहुत बधाई देता हूं। और भविष्य के लिए



असीम शुभकामनाएं मैं उनको देता हूं। आपकी ये डिग्री, आपकी ये शैक्षणिक योग्यता का प्रमाण है। इस नाते ये अपने-आप में महत्वपूर्ण है। लेकिन आपने यहां सिर्फ ये डिग्री ही हासिल की है ऐसा नहीं है। आपने यहां से जो सीखा, जो पाया वो अपने आप में अनमोल है। आप एक समृद्ध विरासत के वारिस हैं। आपका नाता एक ऐसी गुरु शिष्य परंपरा से है। जो जितनी पुरातन है उतनी ही आधुनिक भी है।

वैदिक और पौराणिक काल में जिसे हमारे ऋषियों-मुनियों ने सींचा। आधुनिक भारत में उसे गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे मुनिष्यों ने आगे बढ़ाया। आज आपको जो ये सप्तपरिणय का गुच्छ दिया गया है। ये भी सिर्फ पते नहीं है। बल्कि एक महान संदेश है। प्रकृति किस प्रकार से हमें एक मनुष्य के नाते, एक राष्ट्र के नाते उत्तम सीख दे सकती है। ये उसी का एक परिचायक, उसकी मिसाल है। यही तो इस अप्रतिम संस्था के पीछे की भावना, यही तो गुरुदेव के विचार हैं, जो विश्व भारती की आधारशिला बनी।

भाईयों और बहनों **यत्र विश्वम् भवेतेक निरम्** यानि सारा विश्व एक घोंसला है, एक घर है। ये वेदों की वो सीख है। जिसको गुरुदेव ने अपने बेशकीमती खजाने के विश्व भारती का धैर्य वाक्य बनाया है। इस वेद मंत्र में भारत की समृद्ध परंपरा का सार छुपा है। गुरुदेव चाहते थे कि ये जगह उद्घोषणा बने जिसको पूरा विश्व अपना घर बनाए। घोंसले और घरोंदों को जहां एक ही रूप में देखा जाता है। जहां संपूर्ण विश्व को समाहित करने की भावना हो। यही तो भारतीयता है। यही **वसुधैव कुटुम्बकम्** का मंत्र है। जो हजारों वर्षों से इस भारत भूमि से गुंजता रहा और इसी मंत्र के लिए गुरुदेव ने पूरा जीवन समर्पित कर दिया है।

साथियों वेदों, उपनिषदों की भावना जितनी हजारों साल से पहले से सार्थक थी उतनी ही सौ साल पहले जब गुरुदेव शांति निकेतन में पधारे। आज 21वीं सदी की चुनौतियों से जुझते विश्व के लिए भी ये उतनी ही प्रासंगिक है। आज सीमाओं के दायरे में बंधे राष्ट्र एक सच्चाई है। लेकिन ये भी सच है इस भू-भाग की महान परंपरा को आज दुनिया globalization के रूप में जी रही है। आज यहां हमारे बीच में बंगलादेश की प्रधानमंत्री शेख हसीना जी भी मौजूद हैं। शायद ही कभी ऐसा मौका आया हो। कि एक convocation में दो देश के प्रधानमंत्री मौजूद हों।

भारत और बंगलादेश दो राष्ट्र हैं लेकिन हमारे हित एक-दूसरे के साथ समन्वय और सहयोग से जुड़े हुए हैं। culture हो या public policy हम एक-दूसरे से बहुत कुछ सीख सकते हैं। इसी का एक उदाहरण बंगलादेश भवन है। जिसका थोड़ी में हम दोनों वहां जाकर के उद्घाटन करने वाले हैं। ये भवन भी गुरुदेव के vision का ही प्रतिबिम्ब है।

साथियों, मैं कई बार हैरान रह जाता हूं। जब देखता हूं कि गुरुदेव का व्यक्तित्व का ही नहीं बल्कि उनकी यात्राओं का विस्तार भी कितना व्यापक था। अपनी विदेश यात्राओं के दौरान मुझे अनेक ऐसे लोग मिलते हैं। जो बताते हैं कि टैगोर कितने साल पहले उनके देश में आए थे। उन देशों में आज भी बहुत सम्मान के साथ गुरुदेव को याद किया जाता है। लोग टैगोर के साथ खुद को जोड़ने की कोशिश करते हैं।

अगर हम अफगानिस्तान जाएं तो काबुली वाला की कहानी का जिक्र हर अफगानिस्तानी करता ही रहता है। बड़े गर्व के साथ करता है। तीन साल पहले जब मैं तजाकिस्तान गया तो वहां पर मुझे गुरुदेव की एक मूर्ति का लोकार्पण करने का भी अवसर मिला था। गुरुदेव के लिए वहां के लोगों में जो आदर भाव मैंने देखा वो मैं कभी भूल नहीं सकता।

दुनिया के अनेक विश्वविद्यालयों में टैगोर आज भी अध्ययन का विषय है। उनके नाम पर chairs हैं अगर मैं कहूं कि गुरुदेव पहले भी ग्लोबल सिटिजन थे और आज भी है। तो गलत नहीं होगा। वैसे आज इस अवसर पर उनका गुजरात से जो नाता रहा उसका वर्णन करने के मोह से मैं खुद को रोक नहीं पा रहा। गुरुदेव का गुजरात से भी एक विशेष नाता रहा है। उनके बड़े भाई सत्येंद्रनाथ टैगोर जो सिविल सेवा join करने वाले पहले भारतीय थे। काफी समय वे अहमदाबाद में भी रहे। संभवतः वो तब अहमदाबाद के कमीशनर हुआ करते थे। और मैंने कहीं पढ़ा था। कि पढ़ाई के लिए इंग्लैंड जाने से पहले सत्येंद्रनाथ जी अपने छोटे भाई को छः महीने तक अंग्रेजी साहित्य के अध्ययन वहीं अहमदाबाद में कराया था। गुरुदेव की आयु तब सिर्फ 17 साल की थी। इसी दौरान गुरुदेव ने अपने लोकप्रिय नोवल खुदितोपाशान के महत्वपूर्ण हिस्से और कुछ कविताएं भी अहमदाबाद में रहते हुए लिखी थी। यानि एक तरह से देखें तो गुरुदेव के वैश्विक पटल पर जीत स्थापित होने में एक छोटी सी भूमिका हिन्दुस्तान के हर कोने की रही है, उसमें गुजरात भी एक है।

साथियों, गुरुदेव मानते थे कि हर व्यक्ति का जन्म किसी न किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए होता है। प्रत्येक बालक अपनी लक्ष्य प्राप्ति की दिशा में बढ़ सके इसके लिए योग्य उसे बनाना इसमें शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान है। वो बच्चों के लिए कैसी शिक्षा चाहते थे। उसकी झलक उनकी कविता power of affection में हम अनुभव कर सकते हैं। वो कहते थे कि शिक्षा केवल वही नहीं है जो विद्यालय में दी जाती है। शिक्षा तो व्यक्ति के हर पक्ष का संतुलित विकास है जिसे समय और स्थान के बंधन में बांधा नहीं जा सकता है। और इसलिए गुरुदेव हमेशा चाहते थे कि भारतीय छात्र बाहरी दुनिया में भी जो कुछ हो रहा है उससे भली-भांति परिचित रहे। दूसरे देशों के लोग कैसे रहते हैं, उनके सामाजिक मूल्य क्या हैं, उनकी सांस्कृतिक विरासत क्या है। इस बारे में जानने पर वो हमेशा जोर देते थे। लेकिन इसी के साथ वो ये भी कहते थे। कि भारतीयता नहीं भूलनी चाहिए।

मुझे बताया गया है कि एक बार अमेरिका में agriculture पढ़ने गए अपने दामाद को चिट्ठी लिखकर भी उन्होंने ये बात विस्तार से समझाई थी। और गुरुदेव ने अपने दामाद को लिखा था कि वहां सिर्फ कृषि की पढ़ाई ही काफी नहीं है। बल्कि स्थानीय लोगों से मिलना-जुलना ये भी तुम्हारी शिक्षा का हिस्सा है। और आगे लिखा लेकिन अगर वहां के लोगों को जानने के फेर में तुम अपने भारतीय होने की पहचान खोने लगो तो बेहतर है कि कमरे में ताला बंद करके उसके भीतर ही रहना।

भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन में टैगोर जी का यही शैक्षणिक और भारतीयता में ओतप्रोत दर्शन एक दूरी बन गया था। उनका जीवन राष्ट्रीय और वैश्विक विचारों का समावेश था जो हमारी पुरातन परंपराओं का हिस्सा रहा है। ये भी एक कारण रहा कि उन्होंने यहां विश्व भारती में शिक्षा की अलग ही दुनिया का सर्जन किया। सादगी यहां की शिक्षा का मूल सिद्धांत है। कक्षाएं आज भी खुली हवा में पेड़ों के नीचे चलाई जाती हैं। जहां मनुष्य और प्रकृति के बीच सीधा संवाद होता है। संगीत, चित्रकला, नाट्य अभिनय समेत मानव जीवन के जितने भी आयाम होते हैं, उन्हें प्रकृति की गोद में बैठकर निखारा जा रहा है।

मुझे खुशी है कि जिन सपनों के साथ गुरुदेव ने इस महान संस्थान की नींव रखी थी। उनको पूरा करने की दिशा में ये निरंतर आगे बढ़ रहा है। शिक्षा को skill development से जोड़कर और उसके माध्यम से सामान्य मानवी के जीवन स्तर को उपर उठाने का उनका प्रयास सराहनीय है।



मुझे बताया गया है यहां के लगभग 50 गांवों में आप लोगों ने साथ मिलकर, आप उनके साथ जुड़कर के विकास के सेवा के काम कर रहे हैं। जब आपके इस प्रयास के बारे में मुझे बताया गया तो मेरी आशाएं और आकांक्षाएं आपसे जरा बढ़ गई हैं। और आशा उसी से बढ़ती है जो कुछ करता है। आपने किया है इसलिए मेरी आपसे अपेक्षा भी जरा बढ़ गई हैं।

Friends 2021 में इस महान संस्थान के सौ वर्ष पूरे होने वाले हैं आज जो प्रयास आप 50 गांव में कर रहे हैं क्या अगले दो-तीन वर्षों में इसको आप सौ या दो सौ गांव तक ले जा सकते हैं। मेरा एक आग्रह होगा कि अपने प्रयासों को देश की आवश्यकताओं के साथ ओर जोड़िए। जैसे आप ये संकल्प ले सकते हैं कि 2021 तक जब इस संस्थान की शताब्दी हम मनाएंगे, 2021 तक ऐसे सौ गांव विकसित करेंगे यहां के हर घर में बिजली कनेक्शन होगा, गैस कनेक्शन होगा, शौचालय होगा, माताओं और बच्चों का टीकाकरण हुआ होगा, घर के लोगों को डिजिटल लेनदेन आता होगा। उन्हें कॉमन सर्विस सेंटर पर जाकर महत्वपूर्ण फार्म ऑनलाइन भरना आता होगा।

आपको ये भली भांति पता है कि उज्ज्वला योजना के तहत दिए जा रहे गैस कनेक्शन और स्वच्छ भारत मिशन के तहत बनाए जा रहे शौचालयों ने महिलाओं की जिंदगी आसान करने का काम किया है। गांवों में आपके प्रयास, शक्ति की उपासक, इस भूमि में नारी शक्ति को सशक्त करने का काम करेगा और इसके अलावा ये भी प्रयास किया जा सकता है। कि इन सौ गांवों को प्रकृति प्रेमी, प्रकृति पूजन गांव कैसे बनाया जाए। जैसे आप प्रकृति के संरक्षण की तरह हैं, कार्य करते हैं। वैसे ही ये गांव भी आपके मिशन का हिस्सा बनेगा। यानि ये सौ गांव उस विजन को आगे बढ़ाएं जहां जल भंडारण की पर्याप्त व्यवस्थाएं विकसित करके जल संरक्षण किया जाता हो। लकड़ी न जलाकर वायु संरक्षण किया जाता हो। स्वच्छता का ध्यान रखते हुए प्राकृतिक खाद्य का उपयोग करते हुए भूमि संरक्षण किया जा सकता है।

भारत सरकार की गोबर धन योजना का भरपूर फायदा उठा जा सकता है। ऐसे तमाम कार्य जिनकी चेक लिस्ट बनाकर आप उन्हें पूरा कर सकते हैं।

साथियों, आज हम एक अलग ही विषय में अलग ही चुनौतियों के बीच जी रहे हैं। सवा सौ करोड़ देशवासियों ने 2022 तक जबकि आजादी के 75 साल होंगे। न्यू इंडिया बनाने का संकल्प लिया है। इस संकल्प की सिद्धि में शिक्षा और शिक्षा से जुड़े आप जैसे महान संस्थानों की अहम भूमिका है। ऐसे संस्थानों से निकले नौजवान देश को नई ऊर्जा देते हैं। एक नई दिशा देते हैं। हमारे विश्वविद्यालय सिर्फ शिक्षा के संस्थान न बने। लेकिन सामाजिक जीवन में उनकी सक्रिय भागीदारी हो, इसके लिए प्रयास निरंतर जारी है।

सरकार द्वारा उन्नत भारत अभियान के तहत विश्वविद्यालयों को गांव के विकास के साथ जोड़ा जा रहा है। गुरुदेव के विजन के साथ-साथ न्यू इंडिया की आवश्यकताओं के अनुसार हमारी शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़ करने के लिए केंद्र सरकार लगातार प्रयासरत है।

इस बजट में revitalizing infrastructure & system in education यानि RISE नाम से एक नई योजना शुरू करने की घोषणा की गई है। इसके तहत अगले चार साल में देश के education system को सुधारने के लिए एक लाख करोड़ रुपया खर्च किया जाएगा। Global Initiative of Academic Network यानि ज्ञान भी शुरू किया गया। इसके माध्यम से भारतीय संस्थाओं ने पढ़ाने के लिए दुनिया के सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों को आमंत्रित किया जा रहा है।

शैक्षिक संस्थाओं को पर्याप्त सुविधाएं मिलें इसके लिए एक हजार करोड़ रुपये के निवेश के साथ Higher Education Financing Agency शुरू की गई है। इससे प्रमुख शैक्षिक संस्थाओं में High Quality Infrastructure के लिए निवेश में मदद मिलेगी। कम उम्र में ही Innovation का mindset करने के लिए अब उस दिशा में हमें देश भर में 2400 स्कूलों को चुना। इन स्कूलों में Atal Tinkering Labs के माध्यम से हम छठी से 12वीं कक्षा के छात्रों पर फोकस कर रहे हैं। इन Labs में बच्चों को आधुनिक तकनीक से परिचित करवाया जा रहा है।

साथियों आपका ये संस्थान education में innovation का जीवन प्रमाण है। मैं चाहूंगा कि विश्व भारती के 11000 से ज्यादा विद्यार्थी innovation को बढ़ावा देने के लिए शुरू की गई योजनाओं का ज्यादा से ज्यादा लाभ उठाएं। आप सभी यहां से पढ़कर निकल रहे हैं। गुरुदेव के आशीर्वाद से आपको एक विजन मिला है। आप अपने साथ विश्व भारती की पहचान लेकर के जा रहे हैं। मेरा आग्रह होगा आपसे इसके गौरव को और ऊंचा करने के लिए आप निरंतर प्रयास करते रहें। जब समाचारों में आता है कि संस्थान के छात्र ने अपने innovation के माध्यम से, अपने कार्यों से 500 या हजार लोगों की जिंदगी बदल दी तो लोग उस संस्थान को भी नमन करते हैं।

आप याद रखिए, जो गुरुदेव ने कहा था “जोदि तोर दक शुने केऊ ना ऐशे तबे एकला चलो रे” अगर आपके साथ चलने के लिए कोई तैयार नहीं है तब भी अपने लक्ष्य की तरफ अकेले ही चलते रहो। लेकिन आज मैं यहां आपको यह कहने आया हूं। कि अगर आप एक कदम चलेंगे तो सरकार चार कदम चलने के लिए तैयार है।

जनभागीदारी के साथ बढ़ते हुए कदम ही हमारे देश की 21वीं सदी में उस मकाम तक ले जाएंगे जिसका वो अधिकारी है। जिसका सपना गुरुदेव ने भी देखा था।

साथियो गुरुदेव ने अपने निधन से कुछ समय पहले गांधी जी को कहा था कि विश्व भारती वो जहाज है। जिसमें उनके जीवन का सबसे बहुमूल्य खजाना रखा हुआ है। उन्होंने उम्मीद जताई थी कि भारत के लोग हम सभी इस बहुमूल्य खजाने को संजोकर रखें। तो इस खजाने को न सिर्फ संजोने बल्कि इसको और समृद्ध करने की बहुत बड़ी जिम्मेवारी हम सब पर है। विश्व भारती विश्वविद्यालय न्यू इंडिया के साथ-साथ विश्व को नए रास्ते दिखाती रहे। इसी कामना के साथ मैं अपनी बात समाप्त करता हूं।

आप अपने, अपने माता-पिता, इस संस्थान और इस देश के सपनों को साकार करें इसके लिए आपको एक बार फिर बहुत-बहुत शुभकामनाएं, बहुत-बहुत धन्यवाद।

\*\*\*\*\*

**अतुल कुमार तिवारी/शाहबाज़ हसीबी/बाल्मीकि महतो/ममता**

(रिलीज़ आईडी: 1533608) आगंतुक पटल : 76



प्रधानमंत्री कार्यालय

# आई आई टी बॉम्बे के 56वें दीक्षांत समारोह में प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 11 AUG 2018 2:43PM by PIB Delhi

आज 11 अगस्त है। 110 वर्ष पहले देश की आज़ादी के लिए आज के ही दिन, खुदीराम बोस ने मातृभूमि के लिए अपना सर्वस्व त्याग कर दिया था। मैं उस वीर क्रान्तिकारी को नमन करता हूँ, देश की तरफ से उन्हें श्रद्धांजलि देता हूँ।

साथियों,

आज़ादी के लिए जिन्होंने प्राण दिए, अपना सबकुछ समर्पित किया, वो अमर हो गए, वो प्रेरणा के मूर्ति बन गए। लेकिन हम लोग हैं जिन्हें आज़ादी के लिए मरने का सौभाग्य नहीं मिला, लेकिन हमारा यह भी सौभाग्य है की हम आज़ाद भारत के लिए जी सकते हैं, हम देश के आज़ादी को राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए जी करके जिन्दगी का एक नया लुत्फ़ उठा सकते हैं। आज मैं अपने सामने, आप के भीतर, आपके चेहरे पर जो उत्साह देख रहा हूँ, जो आत्मविश्वास देख रहा हूँ, वो आश्चस्त करने वाला है कि हम सही रास्ते पर आगे बढ़ रहे हैं।

साथियों,

IIT Bombay स्वतंत्र भारत के उन संस्थानों में है जिनकी परिकल्पना टेक्नॉलॉजी के माध्यम से राष्ट्रनिर्माण को नई दिशा देने के लिए की गई थी। बीते 60 वर्षों से आप निरंतर अपने इस मिशन में जुटे हैं। 100 छात्रों से शुरु हुआ सफर आज 10 हज़ार तक पहुंच चुका है। इस दौरान आपने खुद को दुनिया के टॉप संस्थानों में स्थापित भी किया है। यह संस्थान अपनी हीरक जयंति मना रहा हैं, डायमंड जुबली। पर उससे अधिक महत्वपूर्ण हैं वे सभी हीरे, जो यहाँ मेरे सामने बठे हैं, जिन्हें आज दीक्षा प्राप्त हो रही हैं, और जो यहाँ से दीक्षा पाकर, पूरी दुनिया में भारत का नाम रोशन कर रहे हैं। आज इस अवसर पर सबसे पहले मैं डिग्री पाने वाले देश-विदेश के विद्यार्थियों को, और उनके परिवारों को हृदयपूर्वक बधाई देता हूँ, उनका अभिनंदन करता हूँ। आज यहां डॉक्टर रोमेश वाधवानी जी को डॉक्टर ऑफ साइंस की उपाधि भी दी गई है। डॉक्टर वाधवानी को भी मेरी तरफ से बहुत-बहुत बधाई। रमेश जी ने टेक्नॉलॉजी को जन सामान्य की आवश्यकताओं से जोड़ने के लिए उम्रभर काम किया है। वाधवानी फाउंडेशन के जरिए इन्होंने देश में युवाओं के लिए रोज़गार निर्माण, Skill, Innovation और Enterprise का माहौल तैयार करने का बीड़ा उठाया है। एक संस्थान के बतौर ये आप सभी के लिए भी गर्व का विषय है कि यहां से निकले वाधवानी जी जैसे अनेक छात्र-छात्राएं आज देश के विकास में सक्रिय योगदान दे रहे हैं। बीते 6 दशकों की निरंतर कोशिशों का ही परिणाम है कि IIT Bombay ने देश के चुनिंदा Institutions

of Eminence में अपनी जगह बनाई है। और अभी आपको बताया गया कि आपको अब एक हज़ार करोड़ रुपए की आर्थिक मदद मिलने वाली है जो आने वाले समय में यहां इंफ्रास्ट्रक्चर के विकास में काम आने वाला है। इसके लिए भी मैं आपको और पूरी इस टीम को बहुत-बहुत बधाई।

The nation is proud of the IITs, and what IIT graduates have achieved. The success of the IITs led to the creation of several engineering colleges around the country. They were inspired by the IITs, and this led to India becoming one of the world's largest pools of technical manpower. The IITs have built Brand India globally. And they did it over the years. IIT graduates went to America and excelled there: first as students in Universities and then as technology experts, entrepreneurs, executives and in academics. It was a large number of IIT students who built the IT sector in India, brick by brick..or I should say, click by click. Earlier Indians with the IT sector were considered hard working and intelligent - but mainly in other nations, mainly in the US. Now India has become the destination for IT development.

And today, IIT graduates are at the forefront of some of the best start-ups in India. These are start-ups that are also at the forefront of solving so many national problems. To those working in the start-up movement or are planning to start one after College, please do remember that the biggest corporations of today were start-ups of yesterday. They were the result of idealism combined with hard-work and diligence. Keep at it, do not give up, and you will succeed.

You are fortunate to have lived in a campus like this, in a city like Mumbai. You have a lake on one side, and the hills too. Occasionally, you share your campus with crocodiles and leopards. It is still August, but I am sure the mood is indigo today! I am sure the last four years were a wonderful learning experience for you all.

There is so much to look back and remember the college festivals, inter hostel sports, student-faculty associations. Did I mention some studies as well? You have received what can be called the best that our education system has to offer. Students here represent the diversity of India. From different states, speaking different languages, from different backgrounds, you merge here in pursuit of knowledge and learning.

साथियों,

IIT Bombay देश के उन संस्थानों में से है जो New India की New Technology के लिए काम कर रहा है। आने वाले दो दशकों में दुनिया का विकास कितना और कैसा होगा, ये Innovation और नई टेक्नॉलॉजी तय करेगी। ऐसे में आपके इस संस्थान का, IIT का रोल बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। चाहे 5G ब्रॉडबैंड टेक्नॉलॉजी हो, Artificial Intelligence हो, Block Chain Technology हो, Big Data Analysis हो या फिर Machine Learning, ये वो तकनीक है जो आने वाले समय में Smart Manufacturing और Smart Cities के विजन के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होने वाली है।

अब से कुछ देर बाद जिस नई बिल्डिंग का उद्घाटन होगा, वो भी इस दिशा में अहम साबित होने वाली है। Department of Energy Science and Engineering और Centre for Environmental Science and Engineering इस नई बिल्डिंग में काम करने वाले हैं। ये देखते हुए कि Energy और Environment देश और दुनिया के लिए सबसे बड़ी चुनौती हैं, और मुझे विश्वास है कि आने वाले समय में यहां इन दोनों क्षेत्रों में रिसर्च के लिए बेहतर माहौल बनेगा।

मुझे बताया गया है कि इस बिल्डिंग में एक Solar Lab भी स्थापित की जा रही है, जिससे छात्रों को Solar Energy से जुड़ी रिसर्च में सुविधा होगी। Solar Energy के अलावा Biofuel भी आने वाले समय में Clean Energy का एक बहुत बड़ा source सिद्ध होने वाला है। मैंने कल दिल्ली में World Biofuel Day के अवसर पर भी कहा था कि इससे जुड़ी टेक्नॉलॉजी को लेकर इंजीनियरिंग के छोटे से लेकर बड़े संस्थान में पढ़ाई हो, Research हो।

साथियों,

IIT को देश और दुनिया Indian Institute of Technology के रूप में जानती है। लेकिन आज हमारे लिए इनकी परिभाषा थोड़ी बदल गई है। ये सिर्फ Technology की पढ़ाई से जुड़े स्थान भर नहीं रह गए हैं, बल्कि IIT आज India's Instrument of Transformation बन गए हैं। हम जब Transformation की बात करते हैं तो Start Up की जिस क्रांति की तरफ देश आगे बढ़ रहा है, उसका एक बहुत बड़ा Source हमारे IIT हैं। आज दुनिया IIT को Unicorn Start Ups की नर्सरी के रूप में मान रही है। यानि वो स्टार्ट अप अभी भारत में शुरू हो रहे हैं जिनकी भविष्य में Value एक अरब डॉलर से अधिक की होने की संभावना जताई जाती है। ये एक प्रकार से तकनीक के दर्पण हैं, जिसमें दुनिया को भविष्य नज़र आता है।

साथियों,

आज दुनिया भर में जितने भी बिलियन डॉलर Start Ups हैं, उनमें दर्जनों ऐसे हैं जिनको IIT से निकले लोगों ने स्थापित किया है। आज अपने सामने मैं भविष्य के ऐसे अनेक Unicorn Founders को देख रहा हूं।

Friends,



Innovations and Enterprise are going to be the foundation stone for making India a developed economy. A long term sustainable technology-led economic growth is possible on this foundation.

यही कारण है कि हमने Start Up India और Atal Innovation Mission जैसे अभियान शुरू किए हैं जिनके परिणाम अब मिलने लगे हैं। आज भारत Start Up के क्षेत्र में दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा Ecosystem है। 10 हजार से अधिक Start Ups को देश में nurture किया जा रहा है और फंडिंग की भी एक व्यापक व्यवस्था की जा रही है।

साथियों,

आज Innovation Index की रैंकिंग में हम निरंतर ऊपर चढ़ रहे हैं। इसका अर्थ ये है कि Education से लेकर Environment तक की जो हमारी Holistic Approach है उसका परिणाम आज दुनिया के सामने आ रहा है। देश में साइंटिफिक टेम्पर विकसित करने, रिसर्च का माहौल बनाने के लिए हायर एजुकेशन में इंफ्रास्ट्रक्चर पर विशेष ध्यान दिया गया है।

Innovation is the buzzword of the 21st century. Any society that does not innovate will stagnate. That India is emerging as a hub for start-ups shows that the thrust for innovation is very much there. We must build on this further and make India the most attractive destination for innovation and enterprise. And, this will not happen through Government efforts alone. It will happen through youngsters like you. The best ideas do not come in Government buildings or in fancy offices. They come in campuses like yours, in the minds of youngsters like you.

My appeal to you and many other youngsters like you is: Innovate in India, Innovate for humanity.

From mitigating climate change to ensuring better agricultural productivity, From cleaner energy to water conservation, From combating malnutrition to effective waste management. Let us affirm that the best ideas will come from Indian laboratories and from Indian students. On our part, we are doing everything possible to foster a spirit of research and innovation in India.

बीते चार वर्षों में 7 नए IIT, 7 नए IIM, 2 IISER और 11 IIIT, स्वीकृत किए गए हैं। इंफ्रास्ट्रक्चर को बेहतर बनाने के लिए RISE यानि Revitalisation of Infrastructure and Systems in Education कार्यक्रम शुरू किया गया है। इसके तहत आने वाले चार वर्षों में एक लाख करोड़ रुपए जुटाने का लक्ष्य रखा गया है। नए संस्थान, नया इंफ्रास्ट्रक्चर आवश्यक हैं लेकिन उससे भी ज़रूरी वहां से तैयार होने वाली skilled power है। सरकार इस पर भी ध्यान दे रही है।

साथियों,

देश आज हर वर्ष लगभग 7 लाख इंजीनियर कैंपस में तैयार करता है, लेकिन कुछ लोग सिर्फ डिग्री लेकर ही निकलते हैं। उनमें स्किल क्षमता उतनी विकसित नहीं हो पाती। मैं यहां मौजूद शिक्षकों से, बुद्धिजीवियों से आग्रह करता हूं कि इस बारे में सोचें, कैसे क्वालिटी को सुधारा जाए इस पर सुझाव लेकर आएं। Quantity ही नहीं बल्कि Quality भी उच्च स्तर की हो ये सुनिश्चित करना आप सभी की, हम सभी का सामुहिक जिम्मेदारी है। इसके लिए सरकार प्रयास भी कर रही है।

आपकी जानकारी में होगा कि सरकार Prime Minister's Research Fellows योजना चला रही है। इसके तहत हर वर्ष देशभर के एक हजार मेधावी इंजीनियरिंग छात्रों को रिसर्च के लिए संसाधन उपलब्ध कराए जा रहे हैं। इतना ही नहीं इस योजना में चयनित छात्रों को पीएचडी के लिए, IIT और IISc जैसे प्रतिष्ठित संस्थान में ही दाखिला मिलने की व्यवस्था होती है। ये Fellowship आपको देश में रहते हुए ही रिसर्च के लिए बेहतरीन सुविधाएं देने का अवसर उपलब्ध करा रही है। IIT Bombay के छात्र-छात्राओं को भी इसका लाभ उठाना चाहिए।

साथियों,

यहां जितने लोग भी बैठे हैं, वो या तो शिक्षक हैं या फिर भविष्य के लीडर हैं। आप आने वाले समय में देश के लिए या किसी संस्थान के लिए पॉलिसी मेकिंग के काम में जुड़ने वाले हैं। आप जैसे टेक्नॉलॉजी और Innovation से नए स्टार्ट अप के लिए खुद को तैयार कर रहे हैं। क्या करना है, कैसे करना है, इसके लिए आपका एक निश्चित विजन भी होगा।

साथियों,

पुराने तौर-तरीकों को छोड़ना अक्सर आसान नहीं होता। समाज और सरकारी व्यवस्थाओं के साथ भी यह समस्या होती है। कल्पना कीजिए की हजारों वर्षों से जो आदतें विकसित हुईं, सैकड़ों वर्षों से जो सिस्टम चल रहा था, उनको बदलाव के लिए convince करना कितना मुश्किल काम है। लेकिन जब आपकी सोच और कर्म के केंद्र में Dedication, Motivation और Aspiration होती है तो आप सारी बाधाओं को पार पाने में सफल होते हैं।

आज सरकार आप सभी की, देश के करोड़ों युवाओं की आकांक्षाओं को सामने रखकर काम कर रही है। मेरा आप सभी से भी इतना ही आग्रह है कि अपनी असफलता की उलझन को मन से निकालें, सफलता मिलेगी नहीं मिलेगी, करु ना करु , उलझन को निकालें और Aspirations पर फोकस करें। ऊंचे लक्ष्य, ऊंची सोच आपको अधिक प्रेरित करेगी, उलझन आपके Talent को सीमाओं में बांध देगा।

साथियों,

सिर्फ आकांक्षाएं होना ही काफी नहीं है, लक्ष्य भी अहम होता है। आप में से आज जो यहां से बाहर निकल रहे हैं या फिर आने वाले सालों में निकलने वाले हैं, आप सभी किसी ना किसी संस्थान से जुड़ने वाले हैं। किसी नए संस्थान की नींव डालने वाले हैं। मुझे उम्मीद है, ऐसे हर कार्य में आप देश की आवश्यकताओं, देशवासियों की जरूरतों का अवश्य ध्यान रखेंगे। ऐसी अनेक समस्याएं हैं जिनका समाधान आप सभी ढूंढ सकते हैं।

साथियों,

सवा सौ करोड़ देशवासियों के जीवन को आसान बनाने के लिए, Ease Of Living सुनिश्चित करने के लिए आपके हर प्रयास, हर विचार के साथ ये सरकार खड़ी है, आपके साथ चलने को तैयार है। इसलिए मेरी जब भी आप जैसे छात्रों, वैज्ञानिक बंधुओं, उद्योगों से बात होती है तो मैं IIT जैसे तमाम संस्थानों के इर्दगिर्द City Based Clusters of Science की चर्चा जरूर करता हूं। मकसद ये है कि Students, Teachers, Industry, Start Up से जुड़े तमाम लोगों को एक ही जगह पर, एक दूसरे की आवश्यकताओं के हिसाब से काम करने, R&D करने का अवसर मिले। अब जैसे मुंबई के जिस इलाके में आपका संस्थान है, उसे ही लीजिए। मुझे जानकारी दी गई है कि यहां ग्रेटर मुंबई में लगभग 800 कॉलेज और Institutes हैं, जिनमें लगभग साढ़े 9 लाख युवा पढ़ाई कर रहे हैं। आज जब हम यहां Convocation के लिए जुटे हैं, ये इस संस्थान का डायमंड जुबली वर्ष भी है, इस अवसर पर आपको मैं एक संकल्प से जोड़ना चाहता हूं। क्या IIT Bombay, City Based Centre of Excellence का केंद्र बन सकता है?

साथियों,

आप भली भांति जानते हैं कि सरकार ने इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट (IIM) को कानून बनाकर अधिक Autonomy दी है। सरकार ने इस बात पर भी जोर दिया है कि IIM से पढ़कर निकले विद्यार्थी -अलुमनाई, इन संस्थानों में और ज्यादा सक्रिय भूमिका निभाएं। IIM के Board of Governors में भी उनको प्रतिनिधित्व दिया जा रहा है। मैं समझता हूं कि IIT जैसे संस्थानों को भी अपने अलुमनाई के अनुभवों का फायदा उठाने के लिए इस तरह के फैसले पर विचार करना चाहिए। ऐसा होने पर अलुमनाई को भी अपने संस्थान के लिए कुछ बेहतर करने का मौका मिलेगा। मेरे सामने बैठा हर छात्र भविष्य का अलुमनाई है और मेरी इस बात से आप सभी सहमत होंगे कि अलुमनाई एक ऐसी शक्ति है जो इस संस्थान को नई ऊंचाई देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। मुझे बताया गया है कि सिर्फ IIT Bombay के लिए 50 हजार से ज्यादा अलुमनाई हैं। इनके ज्ञान, इनके अनुभव का बहुत बड़ा फायदा आपको मिल सकता है।

साथियों,

यहां पहुंचने के लिए आपने बहुत परिश्रम किया है। आप में से अनेक साथी ऐसे होंगे जो अभावों से जूझते हुए यहां तक पहुंचे हैं। आपमें अद्भुत क्षमता है, जिसके बेहतर परिणाम भी आपको मिल रहा है। लेकिन ऐसे भी लाखों युवा हैं जो यहां आने के लिए परिश्रम करते हैं लेकिन उन्हें सफलता नहीं मिल पाती। उनमें Talent की कमी है ऐसा नहीं है। अवसरों और गाइडेंस के अभाव में उन्हें ये मौका नहीं

मिल पाया है। ऐसे अनेक छात्रों के जीवन में, उनका मार्गदर्शन कर आप एक नई शक्ति, नई चेतना, नई रोशनी ला सकते हैं। ये और भी बेहतर होगा अगर IIT Bombay आस-पास के स्कूलों के लिए Outreach Programme बनाए। छोटे-छोटे बच्चों को यहां कैपस में लाने का प्रबंध हो ताकि वो साइंटिफिक रिसर्च के लिए प्रेरित हों। आपकी जानकारी में होगा कि अब अटल टिकरिंग लैब का भी एक बहुत बड़ा अभियान देश के स्कूलों में चलाया जा रहा है। जहां Artificial Intelligence, 3D Printing जैसी नई टेक्नॉलॉजी से बच्चों को परिचित करवाया जा रहा है। स्कूलों में इस प्रकार की Outreach से इस अभियान को भी मदद मिलेगी। संभव है कि नन्हें मस्तिष्क के नवीन विचारों से कभी कभी हम बड़ों को, आप सभी को भी कुछ नई प्रेरणा मिल जाए।

साथियों,

आज जो डिग्री आपको मिली है, ये आपके dedication, लक्ष्य के प्रति आपके समर्पण का प्रतीक है। याद रखिए कि ये सिर्फ एक पड़ाव भर है, असली चुनौती आपका बाहर इंतज़ार कर रही है। आपने आज तक जो हासिल किया और आगे जो करने जा रहे हैं, उससे आपकी अपनी, आपके परिवार की, सवा सौ करोड़ देशवासियों की उम्मीदें जुड़ी हैं। आप जो करने वाले हैं उससे देश की नई पीढ़ी का भविष्य भी बनेगा और New India भी मजबूत होगा।

करोड़ों उम्मीदों को पूरा करने में आप सफल हों, इसके लिए एक बार फिर बहुत-बहुत शुभकामनाएं, बहुत बहुत बधाई देता हूँ, आप सबके बीच कुछ समय बिताने का अवसर मिला मैं अपनेआप को धन्य मानता हूँ।

बहुत-बहुत धन्यवाद !

\*\*\*\*\*

अतुल कुमार तिवारी/ कंचन पतियाल

(रिलीज़ आईडी: 1542795) आगंतुक पटल : 541

प्रधानमंत्री कार्यालय

# पुनरुत्थान के लिए शिक्षा पर अकादमिक नेतृत्व से संबंधित सम्मेलन में प्रधानमंत्री के भाषण का मूल पाठ

प्रविष्टि तिथि: 29 SEP 2018 6:10PM by PIB Delhi

मंच पर विराजमान इस कॉन्फ्रेंस के चेयरमैन श्रीराम राम बहादुर राय जी, मंत्रिपरिषद के मेरे सहयोगी श्री प्रकाश जावड़ेकर जी, डॉक्टर सत्यपाल सिंह जी, यूजीसी चेयरमैन डॉ. धीरेंद्र प्रताप सिंह जी, Researcher for Resurgence foundation के चेयरमैन डॉ. सचिदानंद जोशी, इग्नू के कुलपति डॉ. नागेश्वर राव, संगोष्ठी में केंद्रीय, राज्य और निजी विश्वविद्यालय से पधारे Chancellors, Vice Chancellors और Directors शिक्षा जगत के सभी अन्य महानुभाव, भाईयों और बहनों।

आज आप सभी Academic Leadership on Education for Resurgence के विषय पर एक सार्थक चर्चा करने के लिए यहां एकत्रित हुए हैं। सबसे पहले मैं आप सबको इस महत्वपूर्ण विषयों को उठाने के लिए बधाई देता हूं। भविष्य के भारत के लिए नये भारत के लिए ऐसे विषयों का मंथन बहुत ही आवश्यक भी है और समय की मांग भी है। साथियों, जब मैं Resurgence यानि पुनरुत्थान जैसे शब्द के बारे में सोचता हूं, तो मन-मस्तिष्क में पहले छवि स्वामी विवेकानंद जी की उभरकर आती है। स्वामी विवेकानंद ने ही दशकों पहले भारत के दर्शन की शक्ति का Resurgence दुनिया के सामने प्रस्तुत किया था। यह उस समय की बात है जब दुनिया एक प्रकार से हमारे देश की क्षमताएं, हमारा सामर्थ्य, हमारा योगदान, हमारा पुरुषार्थ, हमारा पराक्रम सब कुछ भूल चुके थे, और भुला दिया गया था। स्वामी विवेकानंद जी की बात से ही मैं अपनी बात शुरू करना चाहता हूं। उन्होंने शिक्षा के बारे में एक बहुत महत्वपूर्ण बात कही थी, जो आज भी मैं समझता हूं हमारी आज की समिट का guiding principle हो सकता है। हमें ऐसी सर्वसम्पन्न शिक्षा चाहिए विवेकानंद जी ने कहा था हमें ऐसी सर्वसम्पन्न शिक्षा चाहिए जो हमें मनुष्य बना सके। शिक्षा सिर्फ उस जानकारी का नाम नहीं है, जो आपके मस्तिष्क में भर दी गई है। हमें तो भावों या विचारों को इस प्रकार आत्मसात करना चाहिए, जिससे जीवन निर्माण हो, मानवता का प्रसार हो और चरित्र गठन हो। ये विवेकानंद जी की बातें हैं। और अगर आज मैं Resurgence की बात करूं तो मैं नहीं मानता हूं कि इसके बाहर कोई ज्यादा लेकिन फिर भी जब समय बदलता है तो कुछ चीजें जुड़ भी जाती हैं, लेकिन उसी मूल विचार के प्रकाश में ही जुड़ती है और यह तीन तत्व आज की शिक्षा के तीन स्तंभ हैं - जीवन निर्माण, मानवता और चरित्र गठन। स्वामी जी के इन्हीं विचारों से प्रेरित हो करके मैं आज इसमें एक और स्तंभ जोड़ने का साहस करता हूं। क्योंकि समय की मांग है.. और वो है - नवोन्मेष, नव उनमेष Innovation। जब innovation अटक जाता है तो जिंदगी ठहर जाती है। कोई युग, कोई काल, कोई व्यवस्था ऐसी नहीं हो सकती है कि जो innovation के बिना चल सकती है। जीवंतता का भी अगर एक महत्वपूर्ण लक्ष्य है तो वो innovation है। और अगर innovation नहीं है तो जिंदगी को डोहना होता है। व्यवस्थाएं, विचार, जिंदगी परंपराएं ये सब बोझ बन जाती है। अगर हम इन चारों पहलुओं को लेकर अपनी उच्च शिक्षा के पुनरुत्थान के बारे में सोचेंगे, तो हमें एक सही दिशा दिखाई देती है। शिक्षा की ऐसी दिशा जो व्यक्ति के जीवन से ले करके समाज की जरूरतों और राष्ट्र के निर्माण तक में काम आए। इतना ही नहीं शिक्षा की इस दिशा को गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने उसी कालखंड में अलग तरीके से समझाया था। तभी तो उन्होंने कहा था कि हर व्यक्ति का जन्म किसी न किसी लक्ष्य के साथ होता है।

और उस लक्ष्य को पाने में शिक्षा का बहुत बड़ा योगदान होता है। मैं इसी बात को आगे बढ़ाते हुए भी कहूंगा कि जैसे व्यक्ति के जीवन में है हर संस्था का जन्म भी किसी ना किसी निर्धारित लक्ष्य के साथ होना चाहिए और फिर इसके लिए साधन और साध्य में एक सूत्रता भी होनी चाहिए।

साथियों, जब बात विद्या, विद्यालय, विद्यार्थी की हो रही हो तो मैं आपका ध्यान अपने देश की पुरातन गौरवशाली परंपरा की तरफ भी ले जाना चाहता हूं। हमारी संस्कृति का आधार स्तंभ वेद है। आप सभी इस बात को जानते हैं कि वेद संस्कृत भाषा के विद् शब्द से बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ ज्ञानग्रंथ है। इसी विद् से विद्या शब्द विकसित हुआ है, यानि ज्ञान के बिना हमारे समाज, हमारे देश और तो और हमारे जीवन के आधार की भी कल्पना कतई नहीं की जा सकती है। साथियों, ज्ञान और शिक्षा सिर्फ किताबें नहीं हो सकती हैं। शिक्षा का मकसद व्यक्ति के हर आयाम को संतुलित विकास करने का हो, और आप सभी जानते हैं कि संतुलित विकास इसके लिए निरंतर innovation अनिवार्य होता है। हमारे प्राचीन तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला जैसे विश्वविद्यालयों में ज्ञान के साथ innovation पर भी जोर दिया जाता था। तभी तो ऐसे विद्या के मंदिरों से आचार्य चाणक्य, आर्य भट्ट, पाणिनी, धनवंतरि, चरक, सुश्रुत अनगिनत विद्यान उससे निकले थे। अगर इन्होंने सिर्फ किताबी ज्ञान को पर्याप्त मान लिया होता तो क्या दुनिया को राजनीतिशास्त्र, अर्थशास्त्र, खगोलविज्ञान, शल्य चिकित्सा, गणित और व्याकरण के नियम मिल पाते क्या? मैं नहीं मानता वो शायद मिलते। और इसलिए जब "Education for Resurgence" की बात होती है, तो सोच में, विचारों में, नवीनता के बिना काम नहीं चल सकता।

भाईयों-बहनों, शिक्षा और शिक्षा में किताबी ज्ञान को लेकर हमारे देश के आधुनिक इतिहास के तीन महापुरुषों के विचार एक जैसे थे। बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर, दीनदयाल उपाध्याय और डॉ. राममनोहर लोहिया। इन्होंने शिक्षा में चरित्र और समाजहित का प्रतिबिम्ब देखा और बाबा साहब अम्बेडकर ने कहा - चरित्रहीन व विनयहीन सुशिक्षित व्यक्ति पशु से अधिक खतरनाक होता है। यदि सुशिक्षित व्यक्ति की शिक्षा गरीब जनता के हित विरोधी होगी, तो व्यक्ति समाज के लिए अभिशाप बन जाता है। शिक्षा से अधिक महत्व चरित्र का है। यह शब्द डॉ. बाबा साहब अम्बेडकर के हैं। वहीं, पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने भी शिक्षा के सामाजिक दायित्वों को जोड़ करके कहा था कि समाज को हर व्यक्ति को ढंग से शिक्षित करना होगा, तभी वह समाज के प्रति दायित्वों को पूरा करने में सक्षम होगा। यहां उन्होंने शिक्षा संस्थान तक सीमित नहीं रखा विचार, समाज ने ही समाज को शिक्षित करना, एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को संस्कार संक्रमण करती है उस विचार को आधुनिक स्वरूप में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जी ने देखा था। देश के मनीषी डॉ. राममनोहर लोहिया भी कहते थे कि - शिक्षा शोध परक रिसर्च बेस्ड होनी चाहिए। उन्होंने कहा था कि शिक्षा व्यवस्था का स्वरूप ऐसा हो जो व्यक्ति, परिवार, समाज और राष्ट्र को एक सूत्र में बांध सके। हम उस समाज की कल्पना नहीं कर सकते हैं कि एक सर्कल यानि व्यक्ति, दूसरा सर्कल यानि परिवार, तीसरा सर्कल यानि समाज, चौथा सर्कल यानि राज्य, पांचवा सर्कल यानि देश.. यह कल्पना हम नहीं कर सकते। हम तो व्यक्ति से चलते-चलते परिवार, परिवार से चलते-चलते एक ही धारा में एक ही सूत्र में विस्तार होता चले यह कल्पना लेकर चलने वाले लोग हैं, हम ऐसे सर्कल की कल्पना नहीं कर सकते कि एक सर्कल दूसरे से जुड़ा हुआ नहीं है। दोनों सर्कल अलग है तो समाज का वैचारिक विकास, विस्तार और संस्कार की प्रवृत्ति असंभव होगी। देश के इन तीन महान चिंतकों के विचारों से भी स्पष्ट है कि शिक्षा का अगर कोई लक्ष्य न हो तो वह खूंट्टी पर टंगे हुए सर्टिफिकेट से ज्यादा और कुछ नहीं होता है।

साथियों, हमें एक और वास्तविकता को स्वीकार करना होगा कि आज दुनिया में कोई भी देश समाज या व्यक्ति एकाकी isolate हो करके नहीं रह सकता। हमें Global Citizen और Global village के दर्शन पर सोचना ही होगा। और यह दर्शन तो हमारे संस्कारों में प्राचीनकाल से मौजूद है। जब हम वसुधैव कुटुम्बकम् और सर्वे भवन्तु सुखिनः की बात करते हैं तो हमारे दर्शन का हिस्सा यही विश्व



परिवार Global Village का होता है। इसी विजन पर चलते हुए आज सरकार शिक्षा को लक्ष्य देने, उसे समाज से जोड़ने और शिक्षा की समस्याओं का हल ढूँढने की दिशा में लगातार प्रयास कर रही है, innovation भी कर रही है।

साथियों, आज हमारे देश के करीब-करीब 900 विश्वविद्यालय और उच्च शिक्षण संस्थान साथ ही देश में लगभग 40 हजार कॉलेज हैं। आप सोच सकते हैं कि कितनी बड़ी शक्ति की बात हमारे जिम्मे है। यदि हम अपने गांवों और शहरों की समस्याओं को चुनौतियों से निपटने में इन शिक्षा संस्थानों का ज्यादा से ज्यादा सहयोग लें, तो स्थितियां कितनी भिन्न हो जाएगी। और मेरे कहने का मतलब है कि हम “Interlink Institutions to Innovate and Incubate” के दर्शन पर काम करें। एक ऐसी interlinking जो समाज और संस्थान को जोड़े और संस्थानों को भी आपस में जोड़े और सब मिला करके राष्ट्र के सपनों के साथ जुड़े। कल्पना कीजिए कि 20-22 वर्ष का छात्र अपनी डिग्री के लिए पढ़ाई करते समय जब समाज की जरूरत को ध्यान में रखते हुए अपना Thought process develop करेगा तो कितना फर्क पड़ सकता है। जो वो अपने प्रोजेक्ट्स पर काम करते हुए सोच भी रखेगा कि इसका इस्तेमाल समाज के काम आएगा, तो परिणाम निश्चित ही बहुत ही सकारात्मक होंगे।

साथियों, उच्च शिक्षा में हमें उच्च विचार, उच्च आचार, उच्च संस्कार और उच्च व्यवहार के साथ ही समाज की समस्याओं का उच्च समाधान भी उपलब्ध कराना है। मेरा आग्रह है कि विद्यार्थियों को college university के classroom में तो ध्यान दे ही, लेकिन उन्हें देश की आशाओं-आकांक्षाओं के साथ भी जोड़ना होगा। इसी मार्ग पर चलते हुए केंद्र सरकार की भी यही कोशिश है कि हम हर स्तर पर देश की आवश्यकताओं में शिक्षण संस्थानों को भागीदार बनाएं। इसी विजन के साथ हमने जैसा अभी जावड़ेकर जी ने उल्लेख किया अटल टिंकर लैब की शुरुआत की है। इसमें स्कूली बच्चों में innovation की प्रवृत्ति बढ़ाने पर फोकस किया जा रहा है। अब तक देश के 2000 से ज्यादा स्कूलों में ऐसी Atal Tinkering Lab की शुरुआत हो चुकी है और अगले कुछ महीनों में हम इसकी संख्या को बढ़ाकर 5000 तक करने जा रहे हैं। और मैंने बीच में एक बार टेक्नोलॉजी के माध्यम से video conferencing के माध्यम से देशभर के अलग-अलग कौने में Atal Tinkering Lab में काम करने वाले बच्चों के साथ बात की थी। 8वीं, 9वीं, 10वीं कक्षा के बच्चें थे। यानि मुझे उस कार्यक्रम को छोड़ने का मन नहीं करता था। मेरे उस कार्यक्रम के बाद ढेर सारे कार्यक्रमों की पहुंच लगी हुई थी। लेकिन मैं उन बच्चों को सुनना, वो एक-एक प्रयोग दिखाते थे कि हमने लैब में ऐसा किया, हमने लैब में वैसा किया, यानि मैं चकित हो जा रहा था। यानि हमारे बच्चों में कितना potential है उनको थोड़ा सा अवसर दिया जाए, उनकी भीतर की शक्तियों को उभरने दिया जाए, कल्पना बाहर का परिणाम देते हैं। थोपा न जाए, समस्या वहीं पैदा होती है।

हमारी सरकार शिक्षा जगत में निवेश पर भी ध्यान दे रही है। जैसे शिक्षा का infrastructure बेहतर बनाने के लिए RISE यानि Revitalising of Infrastructure and Systems in Education इस कार्यक्रम को हमने व्यापक रूप से शुरू किया है। इसके जरिए 2022 जब भारत की आजादी के 75 साल होंगे। 2022 तक एक लाख करोड़ रुपये खर्च करने का हमारा इरादा है। सरकार ने HEFA यानि Higher Education Funding Agency की स्थापना भी की। जो उच्च शिक्षा संस्थान के गठन में आर्थिक सहायता मुहैया कराएगी। सरकार ने राष्ट्रीय उच्चतर शिक्षा अभियान का बजट भी तीन गुना बढ़ाने का निर्णय किया है। अभी प्रकाश जी आंकड़े दे रहे थे लेकिन मुझे और आगे जाना है। यह राज्यों में उच्च शिक्षा को मजबूत करने में प्रभावी कदम साबित होंगे।

भाइयों और बहनों, पिछले चार सालों में देश में बहुत सारे नये IIT, नये IIM, नये IISER और नये IIIT, नये केंद्रीय विश्वविद्यालय स्वीकृत किए हैं। सरकार एक नीति भी लाई है, जिसके अंतर्गत देश में 20 Institutes of Eminence setup करने की कोशिश की जा रही है। इसमें 10 public sector के और 10 private sector. इस नीति का मकसद देश के शिक्षा संस्थानों को दुनिया के सिद्ध

संस्थानों की लिस्ट में शामिल करना है। आज हम विश्वस्तर की top 500 में बहुत कम मात्रा में नजर आते हैं। यह स्थिति हमें बदलनी है और इसके लिए सरकार public sector के प्रत्येक Institute पर लगभग एक हजार करोड़ रुपया अगले कुछ वर्षों में खर्च करेगी। आप इस बात से भी भलिभांति परिचित होंगे कि Global initiative for academic network यानि GYAN योजना के तहत हम भारतीय संस्थाओं में पढ़ाने के लिए दुनियाभर के सर्वश्रेष्ठ शिक्षकों को आमंत्रित कर रहे हैं।

साथियों हमारी सरकार शिक्षण संस्थानों में विचारों के खुले प्रवाह की पक्षधर है। हमने IIM जैसे संस्थानों को स्वायत्तता देकर इसकी शुरुआत कर दी है। मैं हैरान हूं देश में इस बात की चर्चा नहीं हो रही है। विद्वानजन भी पता नहीं चुप बैठे हैं। IIM जो reform किए गए शायद हिन्दुस्तान में जो reform की बड़ी-बड़ी वकालत करने वाले लोग थे, जो पिछले 20-25 साल से लिखते रहे होंगे, शायद उन्होंने भी सोचा नहीं होगा इतनी ताकत के साथ हमने.... लेकिन हो जाने के बाद कहीं अच्छा कहेंगे तो मोदी के खाते में चला जाएगा तो मुसीबत होगी लिखना बंद कर देंगे। और इसकी वजह से जो बदलाव आया है IIM को अपने course, अपना curriculum, teacher appointment यहां तक कि board member appointment, expansion खुद उन्हीं को तय करना है। आप कर लीजिए, मैंने यही कहा है, मुझे करके दिखाइये, सरकार कहीं नहीं आएगी, कोई बाबू आ करके नहीं बैठेगा। अब यह उनका जिम्मा है वो करके दिखाए।

भारत में उच्च शिक्षा से जुड़ा यह एक मैं समझता हूं एक अभूतपूर्व प्रयोग है और यह फैसला आगे हमें और institute की ओर ले जाना है। हाल ही में UGC ने Graded Economic Regulation भी जारी की है, जिससे युनिवर्सिटियों और कॉलेजों को autonomy दी गई। इसका उद्देश्य शिक्षा के स्तर को सुधारना तो है ही इससे उन्हें सर्वश्रेष्ठ बनाने में भी मदद मिलेगी। इस रेगुलेशन की वजह से देश में 60 Higher Education institute और Universities को Grade autonomy मिल चुकी है। इसमें से कई राज्यों की युनिवर्सिटिया भी इसका हिस्सा है। सरकार की तरफ से किये जा रहे इन प्रयासों के बीच आप सभी का भी यह दायित्व बनता है कि सकारात्मक माहौल का जितना ज्यादा लाभ उठा सकते हैं, उठाए और उसमें जो अच्छाइयां हैं जो हमारे उत्तम-उत्तम सपनें थे उन सपनों का मेल बिठा करके इस समय को हम गवाने जाने न दें, इसको खोने न दें। आप में से ज्यादा लोगों का Tenure चार-पांच साल का होता है। इन वर्षों के दौरान कार्य करते हुए आपको भी अपने लिए कुछ लक्ष्य निर्धारित करने चाहिए। आपको पहले दिन से यह सोचना होगा कि जब आपको कार्यकाल समाप्त होगा, तब आप क्या Legacy छोड़कर के जाएंगे। अनेक ऐसे विषय हैं जिन पर ध्यान देने की आवश्यकता है, जो उच्च शिक्षा के स्तर में resurgence के लिए बहुत आवश्यक है। और जैसे कि आप शिक्षण की नई पद्धतियों को विकसित करने में सहयोग दे सकते हैं। आज हर दिन एक नई टेक्नोलॉजी आती है। हम समय के साथ रहते हुए नई टेक्नोलॉजी का प्रयोग करके शिक्षण की व्यवस्था को और मजबूत कैसे कर सकते हैं। टीचर की ट्रेनिंग जो हमेशा से एक उपेक्षित क्षेत्र रहा है, उसे कैसे सुधार सकते हैं। हम इस बात से सहमत होंगे कोई गरीब से गरीब भी हो या अमीर से अमीर भी हो अगर उसको जीवन की एक इच्छा पूछोगे, गरीब से गरीब पूछोगे ड्राइवर होगा, peon होगा, सामान्य जिंदगी गुजारा करने वाला मजदूर व्यक्ति होगा या अमीर से अमीर होगा। अगर उसको पूछोगे, तो एक सपना common होता है और वो होता है खुद के बच्चों की अच्छी शिक्षा। अमीर से अमीर व्यक्ति भी चाहता है कि भई मेरे बच्चों को संभालने वाला कोई अच्छा टीचर मिल जाए, कोई अच्छा स्कूल मिल जाए, गरीब से गरीब भी चाहता है कि मेरे बच्चे के लिए अच्छी शिक्षा की व्यवस्था हो जाए। अब यह बिना टीचर संभव नहीं है, हर कोई अच्छा टीचर ढूंढता है और इसलिए हमारा फोकस इस बात पर भी होना चाहिए कि समाज को उत्तम शिक्षक कैसे मिले? और मिशनरी जीन वाले टीचर चाहिए। हमारी institution बहुत बढ़िया-बढ़िया CEO को पैदा करते हैं, दुनिया की बड़ी-बड़ी कंपनियों के CEO बन जाते हैं, हम बड़ा गर्व करते हैं कि मेरे देश की फलानी institution से निकला हुआ व्यक्ति उस देश के बड़े उद्योग या व्यापार जगत का वो CEO बन गया है, मुझे तो खुशी जब होगी, तब हम कहेंगे मेरे यहां से निकला हुआ टीचर

उसने देश को 50 वैज्ञानिक दिए हैं, 50 डॉक्टर दिए हैं। और मैं यह मानता हूँ कि यह आज की बड़ी आवश्यकता है। अगर आप किसी अच्छी साहित्यकार से मिलेंगे कवि को सुनेंगे, देखेंगे, तो पाएंगे कि उनके भीतर से जो चीजें निकली हैं चिंतन स्वयं का हो, कलम खुद की हो, शब्द स्वयं के होंगे, मां सरस्वती का आशीर्वाद होगा, लेकिन एक बात common होगी, वो यह होगी जो कुछ भी निकला होगा, वो जीवन के अनुभव से निकला होगा, समाज के प्रति संवेदना से निकला होगा, कुछ सपनों के कारण निकला होगा। यह सिर्फ शब्दों का जोड़ नहीं होता, पूरा भाव-विश्व होता है जो इन शब्दों को गर्भाधान करवाता है और उस गर्भाधान में से कोई कविता बनकर कोई साहित्यिक रचना बन करके निकलती है। कोई creative चीज बनकरके निकलती होगी। शायद कलम से निकले, कम्प्यूटर से निकले लेकिन उसके मूल में समाज के प्रति वो संवेदना होती है। जिंदगी के अनुभव का एक निचोड़ होता है, तब जा करके निकलता है। और इसलिए समाज के सुख-दुख को समझना उसे जमीन पर रह करके महसूस करना यह हमारी शिक्षा व्यवस्था का अंग कैसे बने यह समय की मांग है। यह तब होता है जब शिक्षा का विस्तार class room की चौखट से बाहर भी हो। अब जैसे पुराने समय में गुरुकुल में विद्यार्थियों को लकड़ी काटने के लिए भेजा गया। राजा महाराजाओं के बेटे गुरुकुल में पढ़ते थे। अब उस संस्था के लिए लकड़ी मंगवाना कोई मुश्किल काम नहीं था, लेकिन संस्कार करने के लिए, जीवन का अनुभव करने के लिए राजा का बेटा भी अगर गुरुकुल में पढ़ता है तो उसको लकड़ी काटने के लिए जाना पड़ता था। और इसलिए उसके पीछे मकसद यह होता था कि छात्र बाहर जाए, समाज, उसकी चुनौतियों को देखें, समझे। इसी तरह विद्यार्थियों को दी जाने वाली शिक्षा का विस्तार class room के दायरे से बाहर होना बहुत अनिवार्य है। वो आसपास के किसी महोल्ले में जाए, अपने आसपास देखे कि कैसे झुग्गी-झोपड़ियों में कुपोषण की समस्या है। कुछ बच्चों को पर्याप्त टीके नहीं लगे हैं। ड्रग्स धीरे-धीरे करके गरीब परिवार में भी घुसता चला जा रहा है। क्या कारण है बच्चे स्कूल छोड़ करके ऐसे ही भटक रहे हैं। समाज की इस तस्वीर से उनका परिचय भी बहुत आवश्यक है।

आप सोचिए अगर कॉलेज में पढ़ने वाले युवा अपने आसपास के इलाके में जा करके सिर्फ एक बात का प्रचार करे, एक बात के प्रति जागरूकता फैलाएं, सब बच्चों को कहें झुग्गी झोपड़ी में, गरीबों में अरे भई देखो बच्चे हाथ धोए बिना खाना नहीं खाना है। बार-बार कहें, आप कल्पना कर सकते हैं कि इतना बड़ा बदलाव आएगा, चीज़ छोटी है। मैं वो बातें नहीं कर रहा हूँ कि बजट लगाओ, ब्रिटिंग करो, reform करो form भरो, वो नहीं कह रहा हूँ। मैं जुड़ने की बात कर रहा हूँ। जुटने की बात कर रहा हूँ। जागरूकता के तरीके innovative हो सकते हैं। creative हो सकते हैं। ऐसे अभियान न सिर्फ विद्यार्थियों का खुद का जीवन सटढ़ बनाएंगे बल्कि अनेक गरीब बच्चों के जीवन की रक्षा भी करेंगे।

मैं अभी कुछ दिन पहले बनारस गया था, मेरा लोकसभा का क्षेत्र है। और मेरी वहां मुलाकात काशी विश्वविद्यालय के कुछ नौजवानों के साथ हुई। मैं नहीं जानता हूँ उनके Vice Chancellor उनको कभी मिले हैं कि नहीं मिले हैं, लेकिन मुझे मिलने का मौका मिला। इन युवाओं ने चार-पांच साल पहले एक संस्था शुरू की Try to fight. Try to fight के नाम से। शुरू में ये तीन-चार लड़के थे और अब तो ये बहुत बड़ा ग्रुप बन गया है, लड़के-लड़कियां सब इकट्ठे आए हैं।

इन युवाओं ने जो कचरा बीनने वाले बच्चे होते हैं, उन पर उनका ध्यान गया और उनका मन कर गया कि इन बच्चों की शिक्षा होनी चाहिए। और उन्होंने अपनी शिक्षा के समय में से समय निकाल करके इन कचरा बीनने वाले बच्चों को स्कूल ले जाने की दिशा में मेहनत की, कुछ पढ़ाना शुरू किया, कुछ समय देने लगे, मतलब मेहनत करने लगे। आज बनारस में ये युवा संस्था 1000 से ज्यादा गरीब बच्चों को शिक्षा देने का काम कर रही है।

मैं उन बच्चों को भी मिला, उन नौजवानों से भी मिला और परिवार में ऐसे ही बच्चे पैदा हुए, मां अपने काम में है, बाप अपने काम में है। बच्चों की दुनिया अलग है। ऐसी गलत आदतों में फंसे हुए थे, उन सबको बाहर निकाल करके आए। एक बच्ची की मैंने देखा इतना बढ़िया पेंटिंग था, उसकी ताकत

थी, भगवान ने उसको गिफ्ट दी थी। उन्होंने जब मुझे उसको गिफ्ट किया, उस बच्ची ने; मैं हैरान था। फिर मैंने उसको पूछा, बेटा तुम्हारे परिवार में किसी ने, नहीं-नहीं बोली, मैं ऐसे ही करती थी और ये जब साहब लोग आए, तो उन्होंने फिर मेरे लिए कागज लाए, कलम लाए, अब मैं उसी पर कर रही हूं।

देखिए, उस कॉलेज के छात्र, वे हुडदंग में भी जा सकते हैं, यूनियनबाजी में जा सकते हैं, आंदोलन में जा सकते थे, लेकिन उन्होंने रास्ता ये चुना और 1000 बच्चों की जिंदगी को बदल दिया और मैं मानता हूं सिर्फ उन हजार लड़कों की जिंदगी नहीं बदली, उन युवाओं की जिंदगी ज्यादा बदली है, जिन्होंने संवेदना को समझा है।

समाज के हित में काम करने वाली ऐसी संस्थाओं ने जितने ज्यादा युवा जुड़ेंगे, इस तरह के अभिनव प्रयोग करेंगे उतना ही गरीब-वंचित बच्चों को लाभ मिलेगा। इन सब कार्यों में बहुत बजट या आर्थिक सहायता की आवश्यकता नहीं होती है लेकिन ऐसे कार्य कॉलेज में पढ़ने वाले विद्यार्थियों और किसी झुग्गी-झोंपड़ी में रहने वाले छोटे बच्चों, दोनों को ही प्रेरणा देने का काम करेंगे। उनमें आपस में भी एक connect साबित होगा, लेकिन हमारे देश का एक दुर्भाग्य भी है। क्षमा करना, कोई बुरा मत मानना। हम लोग स्कूल में पढ़ते थे, तब स्कूल में टीचर कहते थे कि आज कोई सेवा कार्य किया हो तो note लिख करके आना। शायद आप लोगों को भी होगा ऐसा, आज कौन सा सेवा कार्य किया ऐसा लिख करके और 100 में से 90 बच्चे लिखते थे कि आज रास्ते में एक अंधजन मिला, उसको मैंने रास्ता cross करवाया। आप देख लीजिए, 90 बच्चे यही लिखते थे। यानी एक तो वो झूठ लिखने की आदत डालते थे, झूठा करने की आदत डालते थे और हम उसको टोकते भी नहीं थे कि ये छोटा सा गांव है यहां रास्ता cross करने की नौबत कहां से आई यार, बस चलती है गाड़ी। पहले से चली आ रही है, हमारी भी चलती है, आज भी चलता होगा शायद।

मेरा कहने का तात्पर्य है ये सारा innovation न होने का परिणाम है। ये शुरू इसलिए हुआ होगा कि उस बच्चों को समाज सेवा के संस्कार हों, लेकिन बाद में वो एक ritual बन गया, प्राणहीन हो गया क्योंकि लिखना है, तुम लिख करके लाए हो, पेज भर गया है, टीचर को समय नहीं है पढ़ने के लिए। पूरा पेज लिखा है फिर अंदर कुछ भी लिखा हो, लिखा तो है।

मैं समझता हूं इसमें बदलाव जरूरी है। और मैं मानता हूं आप में से बहुत से लोग इन बातों से परिचित होंगे कि इस सरकार में आने के बाद मैंने एक और प्रयास शुरू किया है। मेरी कोशिश रहती है कि जहां कहीं भी यूनिवर्सिटी के convocation में जाता हूं, यहां शायद कुछ बैठें होंगे जिनकी यूनिवर्सिटी में जाने का मौका मिला, तो मैंने एक नियम बनाया है। मेरे ऑफिस में से चिट्ठी जाती है कि मैं उस convocation में आऊंगा लेकिन वहां मेरे स्पेशल गेस्ट होंगे पचास। उनके लिए बैठने की आगे के row में स्पेशल व्यवस्था चाहिए। ये मेरा आग्रह रहता है और वो 50 कौन होते हैं- उस इलाके के सरकारी स्कूल के झुग्गी-झोंपड़ी वाले बच्चे जो पढ़ते हैं, वो सातवीं, आठवीं, नौवीं, दसवीं के बच्चे मेरे Chief guest होते हैं। उनको मैं परिचय करवाता हूं उस पूरे audience में convocation में। क्यों, मैं उन बच्चों को संस्कार करना चाहता हूं and seeing is believing, वो जब बैठता है बच्चा, उसने तो बेचारा अपना झुग्गी-झोंपड़ी देखी है, स्कूल के वो जो environment देखा है, इतनी बड़ी यूनिवर्सिटी के campus में आता है। बैठा है, सब अलग-अलग, बराबर और वो पहन करके बच्चे आते हैं, टोपी में और जब सर्टिफिकेट लेते हैं, उसके अंदर भी एक बीज अंकुरित होने लगता है कि कभी मैं भी। मैं भी कभी इस dias पर जाऊंगा और मुझे भी कोई इस प्रकार से देगा, ये सपने बोलने का काम होता है।

चीज छोटी होती है, बदलाव बजट से आते हैं ऐसा नहीं है जी। बदलने के इरादे से आते हैं, जुड़ने के साथ शुरू होते हैं और जूझने से सफलता भी मिलती है, ये संकल्प ले करके चलना है। और इसलिए जब भी मैं शिक्षा जगत के विद्वानों के बीच जाता हूं तो एक बात पर जरूर मैं बल देता हूं। और ये विषय

हैं city based excellent centers. हर संस्थान को ये भी जिम्मेदारी लेनी होगी कि वह अपने आसपास के education और problem solution eco system को सही रूप से तैयार करे। और इसके लिए मैं आपको कुछ उदाहरण देना चाहता हूँ।

हमारे विद्यार्थियों को जिम्मेदारी दी जा सकती है कि वह अपने आसपास के लोगों को digital literate बनाने का काम करें। वे अपने आसपास के लोगों को आयुष्मान भारत, उजाला, स्वच्छ भारत मिशन जैसी योजनाओं से परिचित कराएं। वो उनके जीवन को आसान बना सकते हैं। विद्यार्थी अपनी locality में जल संरक्षण, पर्यावरण और बिजली बचाने की सीख दें।

ऐसे अनेक कार्यों की लिस्ट बनाकर, pool बनाकर शिक्षा संस्थान एक-दूसरे से साझा भी कर सकते हैं। मैं तो ये भी कहता हूँ कि इस काम में सिर्फ शिक्षक और छात्र ही नहीं, अभिभावक और alumni को भी जोड़ना चाहिए। जब शिक्षा से इस कार्य हर स्तर पर समाज का जुड़ाव होगा तो हमारे युवाओं का सामर्थ्य और उनकी समझ में कितनी बढ़ोत्तरी होगी इसका आप अंदाज लगा सकते हैं।

भाइयो और बहनों, देश के युवाओं ने अपनी क्षमता से Brand India को वैश्विक पहचान दिलवाई है। देश के तमाम विश्वविद्यालयों, अलग-अलग संस्थानों से जैसे IIT, IIM, मेडिकल कॉलेज में पढ़े छात्रों ने विदेश में जाकर भारत का नाम रोशन किया है। कई तो दुनिया की बड़ी कम्पनियां चला रहे हैं। हम सब इस बात से भी भलीभांति परिचित हैं कि देश के युवाओं के पास विचारों की कमी नहीं है। अगर हमारे पास millions of million problem भी हैं तो billion solution भी हैं, ये विश्वास है।

ये भी सच है कि आज की दुनिया की सबसे बड़ी कंपनियां कभी न कभी start up ही होती थीं। इसी को ध्यान में रखते हुए सरकार Start up India, Stand up India, Skill India जैसी योजनाएं चला रही है। मैं इस बात को ले करके भी आश्वस्त हूँ कि आने वाले दिनों में artificial intelligence, machine learning, 5G technology, block chain, big data analysis जैसे क्षेत्रों में हमारे युवा, ये world leader बन सकते हैं। बनाने हैं हमें। हम सब ये जानते हैं कि हमारा देश technical human resource में दुनिया का बहुत बड़ा pool है। हम Start up में दुनिया का दूसरा सबसे बड़ा eco system हैं। Innovative index में लगातार प्रगति कर रहे हैं।

ये सारी स्थितियां हमारे देश के नौजवानों और शिक्षा संस्थानों, दोनों के ही अनुकूल हैं और इसलिए हम सभी को मिलकर देश के युवाओं में social scientific और innovative temper इसका विकसित करने की दिशा में हम लोगों ने काम करने की बहुत आवश्यकता है।

साथियों, Resurgence तभी संभव है जब हम सब एक कदम आगे बढ़ें। वैसे भी Research से Resurgence खामियों को खत्म कर आगे बढ़ने का तो प्रयास है ही, लेकिन साथ-साथ नए युग के अनुकूल बदलाव लाना, ये उसमें निहित होना चाहिए।

मेरी कमियां दूर करो, उतना नहीं हो, मैं बीमार हूँ इसलिए बीमारी से मुक्त हो जाऊं, इतना नहीं है, मुझे तंदुरुस्त भी होना है, ये भी मेरा इरादा होना चाहिए। शिक्षा जगत के आप सभी दिग्गज New India के निर्माण के लिए देश की नींव को और मजबूत करें। देश के नौजवानों में और आत्मविश्वास पैदा करें। इसी कामना के साथ मैं फिर एक बार इस महत्वपूर्ण imitative के लिए आप सबको हृदय से बहुत बधाई देता हूँ। आप यहां से जो मंथन करेंगे, जो चिंतन करेंगे, जो चीजें उसमें से उजागर हो करके आएंगी, मुझे भरोसा है कि आप वो लोग हैं जो धरती से जुड़े हुए हैं, जो बीते हुए कल से जुड़े हैं। वो लोग हैं जो आने वाले उत्तम कल के सपने संजो करके जिंदगी खपाने वाले लोग हैं। जहां ऐसा समूह होता है, वो बहुत कुछ दे सकता है।

मुझे विश्वास है कि ये चिंतन, ये मनन, ये प्रयास देश के आने वाले समय के लिए कुछ न कुछ महत्वपूर्ण चीजें दे करके जाएगा। इस अपेक्षा के साथ फिर एक बार इस प्रयास के लिए बधाई देते हुए मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

धन्यवाद।

\*\*\*\*\*

**अतुल तिवारी/शाहबाज़ हसीबी/बाल्मीकि महतो/तारा/निर्मल शर्मा**

(रिलीज़ आईडी: 1548528) आगंतुक पटल : 42



प्रधानमंत्री कार्यालय

# “मैं नहीं हम” पोर्टल व ऐप के शुभारंभ एवं सेल्फ4सोसायटी पर आईटी प्रोफेशनल्स के साथ प्रधानमंत्री का संवाद

प्रविष्टि तिथि: 24 OCT 2018 10:34PM by PIB Delhi

मंत्री परिषद के मेरे सभी साथी, भारत के औद्योगिक जीवन को गति देने वाले, आईटी प्रोफेशन को बल देने वाले सभी अनुभवी महानुभाव, और आईटी के क्षेत्र से जुड़ी हुई हमारी युवा पीढ़ी, गांव में CSC के सेंटर में बैठे हुए बहुत आशाओं के साथ सपनों संजो करके जी रहे हमारे स्कूल, कॉलेज के students, आईआईटी समेत अनेक institutions के विद्यार्थी, मेरे लिए प्रसन्नता का विषय है कि जो मुझे सबसे प्रिय काम है ऐसे अवसर पर आज आपके बीच आने का मौका मिला है।

हमारे मंत्री श्री रविशंकर जी, सरकार के काम का ब्योरा दे रहे थे, लेकिन मैं इस काम के लिए आपके बीच नहीं आया हूं। कोई भी इंसान अपने करियर में कितना भी आगे चला जाए, वैभव कितना ही प्राप्त कर ले, पद-प्रतिष्ठा कितनी ही प्राप्त कर लें। एक प्रकार से जीवन में जो सपने देखें हो वो सारे सपने अपनी आंखों के सामने उसे अपने स्व-प्रयत्न से साकार की, उसके बावजूद भी उसके मन में संतोष के लिए तड़प, भीतर संतोष कैसे मिले? और हमने अनुभव किया है कि सब प्राप्ति के बाद व किसी और के लिए कुछ करता है, कुछ जीने का प्रयास करता है, उस समय उसका satisfaction level बहुत बढ़ जाता है।

मैं अभी प्रारंभ की फिल्म में श्रीमान अजीम प्रेम जी को सुन रहा था। 2003-04 में जब मैं गुजरात का मुख्य मंत्री था और वो कार्यकाल में मुझसे मिलने आते थे तो अपने business के संबंध में, सरकार के साथ किसी काम के संबंध में वो बात करते थे। लेकिन उसके बाद मैंने देखा पिछले 10-15 साल से जब भी मिलना हुआ है एक बार भी वे अपना, कंपनी का, अपने corporate work का उसके काम की कभी चर्चा नहीं करते। चर्चा करते हैं तो जिस मिशन को लेकर इन दिनों काम कर रहे हैं वो education का, उसी की चर्चा करते हैं और इतना involve हो करके करते हैं जितना कि वो अपनी कंपनी के लिए नहीं करते। तो मैं अनुभव करता हूं कि उस उम्र में, उम्र के इस पढ़ाव पर जीवन में इतनी बड़ी कंपनी बनाई, इतनी बड़ी सफलता की, यात्रा की, लेकिन संतोष मिल रहा है, अभी जो काम कर रहे हैं उससे। इसका मतलब यह हुआ कि व्यक्ति के जीवन में, ऐसा नहीं है कि हम जिस प्रोफेशन में हैं, अगर मान लीजिए की डॉक्टर है तो किसी की सेवा नहीं करता है... करता है, एक scientist है लेबोरेटरी के अंदर अपनी जिंदगी खपा देता है और कोई ऐसी चीज खोज करके लाता है जो पीढ़ी दर पीढ़ी लोगों की जिंदगी को बदलने वाली है। इसका मतलब नहीं यह नहीं की है वो समाज के लिए काम नहीं करता है। इसका मतलब यह नहीं है कि वह खुद के लिए जीता था या खुद के नाम के लिए कर रहा था, जी नहीं। वो कर रहा था लोगों के लिए, लेकिन अपने हाथों से अपने आंखों के सामने, अपनी मौजूदगी में जो करता है, उसका संतोष अलग होता है। और आज वो संतोष आखिरकार की जो मूल प्रेरणा होती है हर इंसान, कुछ आप भी अपने आप देख लीजिए, अपने खुद के जीवन से देख लीजिए, स्वांतः सुखाय, कुछ लोग यह करते हैं कि मुझे संतोष मिलता है, मुझे भीतर से आनंद मिलता है, मुझे ऊर्जा मिलती है।

हम रामायण में सुन रहे हैं कि गिलहरी भी रामसेतु के निर्माण में राम के साथ जुड़ गई थी। लेकिन एक गिलहरी ने तो प्रेरणा पा करके उस पवित्र कार्य में जुड़ना अच्छा माना, लेकिन दूसरा भी एक दृष्टिकोण हो सकता है कि राम जी को अगर सफल होना है, ईश्वर भले ही हो उसको भी गिलहरी की

जरूरत पड़ती है, जब गिलहरी जुड़ जाती है तो सफलता प्राप्त होती है। सरकार कितने ही initiative लेती हो, सरकार कितना ही बजट खर्च करती हो लेकिन जब तक जन-जन का उसमें हिस्सा नहीं हो, भागीदारी नहीं होगी तो हम जो परिणाम चाहते हैं, इंतजार नहीं कर सकता हिन्दुस्तान। दुनिया भी हिन्दुस्तान को अब इंतजार करते हुए देखना नहीं चाहती है। दुनिया भी हिन्दुस्तान को, हिन्दुस्तान लीड करे इस अपेक्षा से देख रही है। अगर यह दुनिया की अपेक्षा है तो हमें भी हमारे देश को उसी रूप से करना होगा। अगर वो करना है तो हिन्दुस्तान के सामान्य मानव की जिंदगी में बदलाव कैसे आये। मेरे पास जो कौशल है, सामर्थ्य है, जो शक्ति हो, जो अनुभव है उसका कुछ उपयोग मैं किसी के लिए कर सकता हूँ क्या ? एक बात निश्चित है कि किसी ऐसे स्थान है, जहां पर कोई भी गरीब आए, कोई भूखा आए, तो खाना मिल जाता है। वहां जो देने वाले लोग हैं वे भी बड़े समर्पित भाव से देते हैं। खाने वाला जो जाता है वहां, एक स्थिति ऐसी आ जाती है, एक institutional arrangement है, व्यवस्था है, मैं जाऊंगा, मुझे मिल जाएगा। जाने वाले को भी उसके प्रति विशेष attention नहीं होता है कि देने वाले कौन है। देने वाले के मन में भी कुछ conscious नहीं होता है कि आया कौन था। क्यों? क्योंकि उसकी एक आदत बन जाती है, कोई आता है वो खाना खिलाता है, वो चल देता है। लेकिन एक गरीब किसी गरीब परिवार के दरवाजे पर खड़ा है, भूखा है, और एक गरीब अपनी आधी रोटी बांट करके दे देता है। दोनों को जीवन भर याद रहता है। उसमें संतोष मिलता है। व्यवस्था के तहत होने वाली चीजों की बजाय स्व प्रेरणा से होने वाली चीजें कितना बड़ा परिवर्तन करती है यह हम सबने देखा है। हम कभी हवाई जहाज से जा रहे हैं बगल में कोई बुजुर्ग बैठे हैं, पानी पीना है, बोटल है लेकिन खुल नहीं रही है, हमारा ध्यान जाता है, हम तुरंत उसको खोल देते हैं, हमें संतोष मिलता है। यानि किसी के लिए जीने का आनंद कुछ और होता है।

मैंने एक परंपरा विकसित करने का प्रयास किया है कि प्रधानमंत्री बनने के बाद, जब मैं मुख्यमंत्री था तब भी किया करता था, किसी university के convocation में जाता हूँ, तो मुझे बुलाने वालों से मैं आग्रह करता हूँ कि आप उस university के नजदीक में कहीं सरकारी स्कूल हो, झुग्गी-झोपड़ी के गरीब बच्चे पढ़ते हो, आठवीं, नौवीं, दसवीं के, तो वो मेरे 50 special guest होंगे और उस convocation में उनको जगह दीजिए, उनको बैठाइये, उनको निमंत्रित कीजिए और वो आते हैं। मेरे मन में रहता है कि बच्चे अपना टूटा-फूटा जैसा भी है स्कूल, पढ़ रहे हैं। लेकिन convocation में आते हैं तो देखते हैं कि कोई बहुत बड़ा robe पहनकर ऊपर आ रहा है, cap पहनी है और सब लोग उसको कोई certificate दे रहे हैं, उसके भीतर एक सपना जग जाता है। एक बीज बोया जाता है कि एक दिन मैं भी वहां जाऊंगा और मैं भी कभी प्राप्त करूंगा। शायद class room में जितना होता है, उससे ज्यादा उससे होता है। कहने का तात्पर्य यह है हमारे कुछ ऐसी चीज होती है, जिसके कारण हम बहुत सी बातें इसको हम कर सकते हैं। मैंने, हमारे आनंद जी यहां बैठे हैं, एक बात हमेशा मार्क की है और वो भी मेरे मुख्यमंत्री काल से अब तक, मैं कभी गुजरात के विकास के लिए, investment के लिए मिलने जाता था, उद्योगपतियों की मीटिंग करता था यह सज्जन कभी भी उस संबंध में न सवाल पूछते थे, न चर्चा करते थे। वो हमेशा कहते थे साहब, सामाजिक कामों में क्या-क्या हो सकता है। अब यह जो temperament है यह temperament समाज की, देश की बहुत बड़ी ताकत होता है और आज यह आखिर इस कार्यक्रम में जुड़ने से मुझे संतोष और आनंद क्यों हो रहा है। मैं सोशल मीडिया से जुड़ा हुआ इंसान हूँ, इसलिए मुझे जो information परोसी जाती है, मैं information का शिकार नहीं हूँ, जो information मुझे चाहिए मैं खोज करके लेता हूँ और उसके कारण मुझे नई चीज मिलती है। और वो आज टेक्नोलॉजी का प्लेटफॉर्म मुझे provide करता है, उसमें भी मैंने देखा है कई बच्चे, कई नौजवान इतना काम करते हैं, तीन लोगों का ग्रुप, चार लोगों को ग्रुप, saturday, sunday चले जाएंगे। गांवों में जाएंगे, कहीं बस्ती में जाएंगे, लोगों के बीच में रहेंगे, कभी बच्चों को पढ़ाएंगे, करते रहते हैं। यानि खास करके भारत के वर्तमान में 25 से 40 के बीच की जो पीढ़ी है, उसमें यह सहज भाव पैदा हो रहा है, दिखता है, लेकिन इसमें अगर सामूहिकता जुड़ती है, तो वो एक ताकत के रूप में उभर करके आता है।

उसको हम कहीं न कहीं एक मिशन के साथ जोड़ दें। structure व्यवस्था की जरूरत नहीं है। एक मिशन के साथ जोड़ दें, एक प्लेटफॉर्म हो, वो लचीला हो, हर कोई अपनी मर्जी से करता हो, लेकिन जो करता हो, वो कहीं न कहीं जमा होता जाए, परिणाम जमा होता जाए, तो परिवर्तन भी नजर आना शुरू हो जाता है। और यह बात निश्चित है- भारत की तकदीर, तकनीक में है। जो टेक्नोलॉजी आपके पास है, वो हिन्दुस्तान की तकदीर को ले करके बैठी हुई है। इन दोनों को मिला करके कैसे काम कर सकते हैं। कोई एक माली हो, खुले मैदान में ऐसे ही बीज छोड़ दे, मौसम ठीक हो जाएगा तो पौधा भी निकल आएगा, फूल भी निकल आएंगे, लेकिन किसी को भी वहां जा करके उसकी तरफ देखने को मन नहीं करेगा, लेकिन वही माली बड़े organized way में, इस colour के फूल यहां, इतने साइज के यहां होंगे, इतने ऊंचाई के यहां होंगे, यह यहां होगा, यह ऐसा दिखेगा, ऐसा कर करके उन फूलों को करता है, तो वो बगीचा हर किसी के आने-जाने की प्रेरणा का कारण बन जाता है, कारण? उसने बड़े organized way में ढंग से काम किया है, एक व्यवस्था के तहत काम किया है। हमारी यह जो बिखरी हुई सेवा शक्ति है और मैं देख रहा हूं कि इन दिनों सोशल स्टार्टअप का एक युग शुरू हुआ है। और जो बच्चे मिलते हैं न तो पूछते हैं कि क्या करते हो, तो बोले अरे साहब बस कर लिया। मैंने देखा था बेंगलोर में एक लड़का वो आईटी प्रोफेशन में था, कहीं मैंने सोशल मीडिया में देखा था, वो driving करता है, बोला दिन में तीन-चार घंटे driving करता हूं, क्यों? बोले गरीबों को ले जाता हूं, काम करता हूं, मदद करता हूं, अस्पताल ले जाता हूं लोगों को, मुझे अच्छा लगता है।

मैंने ऐसे ऑटो-रिक्शा वाले देखे हैं, जिनके ऑटो के पीछे लिखा होता है कि अगर आपको अस्पताल जाना है तो मुफ्त में ले जाऊंगा। मेरे देश का गरीब ऑटो-रिक्शा वाला। अगर मान लीजिए उसको उस दिन उसको छह लोग ऐसे मिल गए, जिनको अस्पताल ले जाओ, तो उसके तो बच्चे भूखे मरेंगे, लेकिन उसको चिंता नहीं है, वो बोर्ड लगाता है और ईमानदारी से करता भी है। तो यह मूलभूत स्वभाव इंसान के भीतर पड़ा हुआ होता है किसी के लिए कुछ करना है और वही है - "मैं नहीं हम"। इसका मतलब यह नहीं है कि मैं को खत्म कर देना है, हमें मैं का विस्तार करना है। स्व से समष्टि की ओर यात्रा करनी है। आखिरकार व्यक्ति अपना कुनबा क्यों बढ़ाता है। बृहत परिवार के बीच आनंद क्यों अनुभव करता है। यह बृहत परिवार से भी बृहत परिवार मेरा पूरा समाज, मेरा पूरा देश, यह अपने आप में एक ताकत बन जाता है। इसी भाव को ले करके आज सर्विस का भाव ले करके आईटी टू सोसायटी की यात्रा है यह, एक तरफ आईटी टू सोसायटी है तो आईआईटी टू सोसायटी भी है। तो उस भाव को ले करके हमें चलना है। मैं चाहूंगा कि सात-आठ स्थान पर मुझे बात भी करनी है तो बातचीत शुरू करें।

हमारे देश में जनरल छवि ऐसी है धन्नासेठों को गाली देना, व्यापारियों को गाली देना, उद्योगपतियों को गाली देना, फैशन हो गया है। पता नहीं क्यों हुआ है, मैं हैरान हूं इससे। और मैं इसका घोर विरोधी हूं। देश को बनाने में हर किसी का योगदान होता है। आज यह देखा तो पता चलेगा कि इन सारी कंपनियों ने अपने CSR के माध्यम से, सारी व्यवस्था से अपने brilliant स्टाफ को कहा कि चलो पांच दिन तुमको सेवा के लिए जाना है, तो जाओ, तुम्हारी नौकरी चालू रहेगी, छोटी चीजें नहीं हैं। सामान्य जीवन में बहुत बड़ा contribution है। लेकिन आज जब एक प्लेटफॉर्म पर आया तो सबकी आंखें खुल जाएगी। अच्छा देश के हर कोने में हमारे देश के लोग ऐसा-ऐसा काम कर रहे हैं। यह जो सामूहिकता की ताकत बहुत बड़ी होती है। मुझे लगता है कि यह जो प्रेरणा का जो आधार है We, उसमें भी यह Self और Service वाला जो हमारा एंगल है, वो बहुत बड़ा रोल प्ले करेगा और आप communication world के लोग हैं, Technology world के लोग हैं और आप बड़ी आसानी से इन चीजों को तैयार कर सकते हैं तो उसका impact भी बहुत हो सकता है, reach भी बहुत हो सकती है और आप उन चीजों से जुड़े हुए हैं जो low cost होती हैं। तो उसको जितना ज्यादा हम करेंगे, हम प्रेरणा का कारण बनेंगे। और हमारे इन प्रयासों से अधिकतम लोगों को प्रेरणा मिलेगी और एक ही कितने ही फूल कहां-कहां मिले

हैं लेकिन जब गुलदस्ता बनता है तो उसका आनंद कुछ और होता है। मैं समझता हूँ आज इन सेवावृत्तियों का गुलदस्ता बनाने का काम हुआ है। आज यहां पर इस प्रयास से, सेवा भाव से, अपने आप को खपाने वाले, नये-नये क्षेत्रों में काम करने वाले लोग और वो भी हमारी नौजवान पीढ़ी कर रही है। भारत माता को गर्व होता होगा कि मेरे देश के अंदर ऐसे भी फूल खिले हैं जो सुगंध फैलाने का काम निरंतर करते रहते हैं। अनेकों की जिंदगी बदलने का काम करते रहते हैं।

मैं सभी उन नौजवानों को हृदय से बहुत-बहुत बधाई देता हूँ, जिन्होंने इस काम को बड़े मनोयोग से किया है, जी-जान से किया है। मैं उन सभी कंपनियों का अभिनंदन करता हूँ कि उन्होंने अपने आर्थिक विकास के साथ-साथ उन्होंने सामाजिक जिम्मेदारियों के लिए भी अपनी व्यवस्थाओं का उपयोग किया है अपने talent का उपयोग किया है। हमारे देश में देश को आगे बढ़ाने के लिए जन-जन की भागीदारी अनिवार्य है। सवा सौ करोड़ देशवासी आगे बढ़ाना तय कर लेंगे, तो दुनिया की कोई ताकत नहीं है जो हिन्दुस्तान को पीछे रख सकती है। हिन्दुस्तान को आगे आना है। सवा सौ करोड़ देशवासियों की शक्ति से आगे आना है और सही दिशा में आगे जाना है। हरेक की अपनी-अपनी दिशा से परिणाम नहीं आता है, सब मिला करके एक दिशा पर चलते हैं तब जा करके परिणाम आता है और मैं बहुत आशावादी व्यक्ति हूँ। चार साल के मेरे छोटे से अनुभव से मैं कह सकता हूँ कि देश अब तक आगे क्यों नहीं हुआ? यह मेरे लिए सवाल है, मेरे मन में यह सवाल नहीं है कि देश आगे बढ़ेगा या नहीं बढ़ेगा? मेरा विश्वास है कि देश बहुत आगे बढ़ेगा। विश्व में सारी चुनौतियों को पार करते हुए हमारा देश अपना स्थान बना करके रहेगा इस विश्वास के साथ मैं इस कार्यक्रम की योजना के लिए सबका धन्यवाद करता हूँ। आप सब बड़ी संख्या में आए और मुझे इतने लम्बे अरसे तक आप सबको सुनने का आपसे बात करने का मौका मिला।

बहुत-बहुत धन्यवाद।

Thank you!

**अतुल कुमार तिवारी / कंचन पतियाल / तारा-10927**

(रिलीज़ आईडी: 1551057) आगंतुक पटल : 151

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: Urdu , Marathi , Assamese , Gujarati , Tamil , English